



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

वातायन

कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

कल्याण गतिविधियों की कुछ झलकियाँ



वातायन



सत्यमेव जयते

वर्ष 2019-20
(अक्टूबर, 2019 से मार्च, 2020)

अंक: 99

अवधि-छमाही

राजभाषा की सेवा में
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िशा, भुवनेश्वर -751001

मुख पृष्ठ: श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी

वातायन पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्रीमती मधुमिता बसु

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर

प्रकाशन एवं मार्गदर्शन समिति

श्री दिनमणि मल्लिक

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

श्री मसरूर अहमद

उपमहालेखाकार (लेखा व वीएलसी)

श्री नंद दुलाल दास

उपमहालेखाकार (पेंशन)

संपादक

श्री रवीन्द्र नाथ चाँद

हिन्दी अधिकारी

सहयोग

श्री यशवंत कुमार वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक

श्री राजेश कुमार कटरे, कनिष्ठ अनुवादक

श्री सुन्दर लाल साव, कनिष्ठ अनुवादक

कुमारी बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएं हैं कार्यालय व संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है!

प्रधान महालेखाकार का संदेश



इस कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका वातायन का नवीनतम 99वें अंक प्रकाशित हो रहा है यह हमारे लिए हर्ष की बात है। सबसे बड़ी खुशी तो इस बात की है कि हमारे कार्यालय की पत्रिका वातायन को वर्ष 2018-19 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर (कार्यालय) स्तर पर आयोजित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों से प्रकाशित होने वाली राजभाषा पत्रिका प्रतियोगिता में सर्वोत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अलावा हमारे कार्यालय को इसी वर्ष हिंदी में कार्यालयीन कामकाज के लिए भी प्रथम पुरस्कार मिला।

इसमें कोई संदेह नहीं कि इस कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिका वातायन एक स्तरीय एवं पठनीय सामग्री के प्रकाशित हो रही है। इस सफल उपलब्धि के लिए मैं कार्यालय के सभी लेखकों एवं कार्मिकों को बधाई देती हूँ। इस अवसर पर मैं पत्रिका के संपादक मंडल को विशेष साधुवाद देती हूँ एवं उनके प्रयास को इसी तरह बनाए रखें यही आशा करती हूँ।

अंत में मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

मधुमिता बसु
प्रधान महालेखाकार

संदेश



हमारे कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका वातायन का नवीनतम 99वें अंक प्रकाशित हो रहा है यह हमारे लिए अत्यंत खुशी की बात है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए हमारे कार्यालय में कार्यरत कर्मचारी एवं अधिकारीगण प्रयास कर रहे हैं।

हमें इस बात पर प्रसन्नता हो रही है कि वर्ष 2018-19 के लिए नराकास भुवनेश्वर (कार्यालय) स्तर पर आयोजित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों से प्रकाशित होने वाली राजभाषा पत्रिका प्रतियोगिता में वातायन को सर्वोत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार एवं हमारे कार्यालय को राजभाषा में हो रहे काम काज के लिए भी प्रथम पुरस्कार मिला।

इस उपलब्धि पर मैं पत्रिका के साथ हिंदी से जुड़े सभी रचनाकारों, स्टॉफ सदस्यों एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए संपादक मंडल को उनके सराहनीय प्रयास हेतु हार्दिक बधाई देता हूं।

दिनमणि मल्लिक

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय



प्रिय पाठक मित्रो,

हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए रचनात्मक योगदान हेतु कार्यालय के साथी कर्मचारियों को वातायन के साथ जोड़ने का हमारा निरंतर प्रयास रहता है।

सच बताएं तो इन दिनों धीरे-धीरे कार्यालय में यह देखने में आ रहा है कि अब पहले जैसे लोगों को हिंदी भाषा में लिखने के लिए उतना मोटिवेट नहीं करना पड़ता जैसा कुछ वर्ष पहले करना पड़ता था। लोग स्वतः पूछने लगते हैं कि पत्रिका का आगामी अंक कब निकलने वाला है। बेशक यह हिंदी भाषा की लोकप्रियता एवं सकारात्मक सोच का संकेत है एवं इससे यह जाहिर होता है कि लोगों में हिंदी के लिए पहले जो झिझक थी वह अब कम होने लगी है। हमें उम्मीद है कि राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों की भावनाएं बदल रही है एवं इसके प्रचार-प्रसार में काफी मदद हो रही है।

हमारे रचनाकारों के मनोबल बनाए रखने के लिए मैं प्रिय सुधी पाठकों से विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि हमारे रचनाकारों की रचनाओं के बारे में तथा पत्रिका के बारे में आप अपनी कीमती प्रतिक्रियाएं भेज कर पत्रिका को अधिक निखारने में सहयोग करें।

सधन्यवाद।

रबीन्द्र नाथ चाँद
संपादक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	प्रधान महालेखाकार का संदेश		
2	उपमहालेखाकार (प्रशासन) का संदेश		
3	संपादकीय		

गद्य विभाग

1	पगली माँ	श्री दिनमणि मल्लिक, उपमहालेखाकार(प्रशासन)	9
2	एक ब्लैक फ्राईडे था	डॉ. नंद दुलाल दास, उपमहालेखाकार (पेंशन)	11
3	बुढ़ापे की लाठी	श्री राजेश कुमार कटरे, कनिष्ठ अनुवादक	13
4	कलयुगी रिश्तों की हकीकत	कुमारी बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक	18
5	एक फौजी के जज्बात	श्री अनुभव कुमार सिंह, डीईओ	21
6	एक सवाल आपसे	श्रीमती शांतिलता सेठी, वरिष्ठ लेखाकार	22
7	भारतीय संस्कृति	श्री चार ओराम, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	25
8	बदलते रिश्ते	श्री सुन्दर लाल साव, कनिष्ठ अनुवादक	26
9	शून्य का रहस्य	श्री यशवंत कुमार वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक	30
10	प्रगति का सूत्र	श्री पुरुषोत्तम नंद, सहायक लेखा अधिकारी	32

पद्य विभाग

1	साथी	श्री रबीन्द्र नाथ चाँद, हिन्दी अधिकारी	33
2	पता नहीं चलता	श्री सीमाचल साहु, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	34
3	हानिकारक सोशल मीडिया	श्री विशाल कुमार, डीईओ	35
4	मन भँवरा	श्री मनोरंजन पाणिग्राही, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	36
5	ओस, हिंदी से क्यों शर्माते हों।	श्री प्रदीप कुमार, डीईओ	37
6	जिंदगी तेरा शुक्रिया	श्री संजीव दुबे, डीईओ	38

विविधा

1	राजभाषा गतिविधियाँ	39
2	कार्यालय समाचार	44

पगली माँ



श्री दिनमणि मल्लिक

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

“अरे रतना तू तो अभी कुछ दिन पहले अपने पिताजी का काम निपटा कर आया था। अभी शायद महीना भर हुआ है, फिर घर जाने के लिए निकले ! सारे पैसे तो बस भाड़े में निकल जाएगा। घर कैसे चलाएगा?”

“अरे नयी-नयी शादी हुई, उसका मन कोलकाता में नहीं लगता।”

जवाब देना यहां तक कि दोनों दोस्तों की बातों में शर्मिने का भी वक्त नहीं था। रतना के दिमाग में कितनी सारी चिंता थी, उनमें से खास माँ की थी।

शादी के दो-तीन माह के बाद, बिस्तर पर पड़े हुए पिताजी चल बसे। माँ कुछ दिनों तक बिलकुल गुमसुम रही। बाद में बुद-बुदाते हुए कुछ अस्पष्ट बोलने लगी। आंगन में घूमती रहती थी, बिस्तर पर सोती नहीं थी। खाने को देता तो खाती नहीं। कभी-कभी खाना खाने के कुछ ही देर बाद पुनः खाने को मांगती। कुछ कहने पर चिल्लाकर गाली-गलौच करती। पड़ोस में किसी-किसी पर कभी-कभार थूक कर उसका पीछा भी करती थी।

लंबी अवधि तक बिस्तर पर पड़े हुए पिता की अंतिम इच्छा थी कि एक बहू घर में लाएं और माँ के मन में केवल यही चिंता लगी रहती थी कि बुढ़े के बारे में कुछ कह नहीं सकते। मान जाओ।

रतना मान गया था। उसके लिए शादी कोई उत्साह नहीं था। उसके लिए पेट पालने की अधिक चिंता थी। ऐसे तो घर में विधवा बुआ पांच सालों से घर में आ कर रह रही है। बिना बाल-बच्चे के बेचारी करे भी तो क्या। कहां जाएगी, कैसे रहेगी। कितनी उम्मीदें लेकर दो वर्ष पहले कोलकाता आया था पानी पाईप काम सिखेगा। हो सके तो बाहरी देश जाकर ज्यादा पैसा कमाकर घर के सभी लोगों की बातें अच्छी तरह से समझ पाएंगे।

विजय भाई कह रहे थे कटक में डॉक्टर बिंबाधर दास को दिखाने के लिए। मानसिक रोग में पहले से चिकित्सा कराने पर आरोग्य होने की संभावना ज्यादा रहती है। रतना ने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि इस बार कुछ पैसे का इंतजाम कर अपनी माँ को कटक लेकर जाएगा। कालिआ गाँव से आकर बता रहा था कि माँ का पागलपन और बढ़ गया है। सुनकर चित्त स्थिर नहीं हो पाया उनका। ठेकेदार से पाँच हजार रुपये अग्रिम लेकर अब गाँव जा रहा है।

दिन भर ठीक से खाना-पीना नहीं कर पाया। काम से वापस घर आकर बैग लेकर सीधा बस पकड़ने के लिए बाबूघाट चला आया था। कुछ देर तक बस चलने के बाद बाहर की ठण्डी हवा लगने से रतना को नींद आ गई थी। उस नींद की हालत में ही उसे याद आ गई थी पिछली बार गाँव से कोलकाता आने की बातें।

उस दिन सुबह-सुबह वह नहा धोकर निकल पड़ा था, कोलकाता आने के लिए। छोटा सा एक झोला पिछली रात को ही तैयार करके रख दिया था। पत्नी और बुआ से विदा लेकर निकल पड़ा था। मन ही मन खोज रहा था अपनी माँ को "यहीं तो थी। और कहां चली गई?" गाँव के छोर पर जो ग्राम देवी माँ वल्लभी के मंदिर के पास बरगद के नीचे ट्रेकर लगेगा। वहां से बैठकर अली बाजार जाएगा और फिर वहां से कोलकाता के लिए बस पकड़ेगा। देर हो जाएगी सोचकर निकल पड़ा। सोचा शायद पड़ोस के घर की ओर माँ चली गयी होगी। बीच रास्ते में कुछ लोगों की आवाज सुनकर रतना मुड़कर देखा। उसकी माँ हांडी से गोबर पानी निकालकर सड़क पर छिड़कती हुई कह रही थी, "मेरा रतना चला गया.....मेरा रतना उस पार चला गया".....। बुआ और दूसरी औरते गुस्सा होकर उसकी माँ पर भड़क रही थी। "ऐसी कुलक्षणी माँ.....बेटा शुभ-शुभ सोचकर कोलकाता निकला.....ऐसी अशुभ बातें उसके मुंह से कैसे आ रही है!"

थोड़ी देर रुक कर आगे चला गया रतना। ग्राम देवी मंडप में माथा टेकने के बाद बरगद के नीचे जाते वक्त उसकी माँ, दूसरे के मना करने के बावजूद भी उसके पास चली आई थी। माँ को थोड़ा आगे बढ़कर रतना पल भर के लिए गले लगाया और फिर प्रतीक्षा कर रहे ट्रेकर में जाकर बैठ गया।

ठंड के कारण रतना की नीड टूट गई। तब तक करीबन सुबह हो चुकी थी। रतना ने देखा कि बस जाजपुर रोड पार कर चंडीखोल के पास पहुंच चुकी थी। रास्ते में कब बस रुकी और यात्रीगण खाने के लिए उतर गए थे वह जान नहीं पाया था। सोचा, दो घंटे का रास्ता और बचा है, अब घर पहुंच कर खाएगा। बस के भीतर लगभग सभी लोग सो गए थे। वह किसी तरह से बैठ गया और खिड़की के कांच से बाहर की तरफ देखने लगा। रास्ता के किनारे के सारे पेड़ कितनी तेजी से भाग रहे थे।

अचानक बस के अत्यधिक झुकने का अनुभव करते हुए रतना डर गया। जो देखा उससे उसकी छाती कांप उठी। बस रास्ते के किनारे की ओर खिसक रही थी। उसके बाद एक भयानक आवाज और सब कुछ शांत और थम गया।

होश लौटने के बाद खुद को कटक के एक बड़े अस्पताल के भीतर पाया। उठ खड़ा हुआ। सबसे पहले उसने ठेकेदार से लाए हुए अग्रिम पैसा उसकी जेब में हैं कि नहीं हाथ लगा कर देखा। आश्चर्य हुआ सिर पर हाथ घुमाया। थोड़ी बहुत खरोंच के अलावा उसे लगा कि वैसा कुछ उसका हुआ नहीं। बच गया।

डॉक्टर थोड़ा बहुत परीक्षण करके कहा- "तुम्हें कुछ नहीं हुआ, सिर्फ कुछ समय के लिए चेतनाहीन हो गये थे। तुम अब जा सकते हो।" एक पल भी इंतजार किए बिना घर जाने के लिए निकल पड़ा रतना।

गांव में पहुंचते ही समझ गया कि बस एक्सीडेंट की बात आग की तरह फैल गई है। उसे देखते ही लोग कई बातें पूछने लगे। कोई-कोई बोला "देवी माँ के कारण रतना बच गया। पिछली बार गांव से निकलते वक्त उसकी कुलक्षणी मां ने देखो न कैसा कांड किया था। उसका बुरा ग्रह कट गया, देवी माँ की कृपा से। तू जा रतना, जल्दी से देवी माँ के मण्डप में माथा टेक और जो भी पैसे वगैरह है उससे भोग लगा दे।"

लेकिन, लोगों की इन बातों का कोई असर नहीं था रतना पर। वह पुनः अनसुना कर आगे की तरफ चल रहा था। गांव की छोर से जल्दी से जल्दी घर पहुंचने के लिए वह व्याग्र होकर दौड़ने जैसे चलने लगा। घर में माँ को पाकर उसे बहुत जोर से जकड़ लिया और एक छोटे बच्चे की तरह लिपट कर रोने लगा।

एक ब्लैक फ्राईडे था



डॉ. नंद दुलाल दास
उपमहालेखाकार (पेंशन)

ओड़िशा तथा देश के इतिहास में वो एक ब्लैक फ्राईडे था। जी हाँ, 3 मई, 2019 को हम लोग ऐसे ही देखा करेंगे। जितनी भी तैयारियाँ हम लोगों ने कर रखी थी, वो कम थी क्योंकि, उसकी मात्रा इतनी गंभीर थी।

सुबह 7 बजे जब ट्वीटर में देखा कि पारादीप में बताया जा रहा है कि “फनी” का “फना” थोड़ा कमजोर हुआ है, तो एक अजीब सी राहत महसूस हुआ और दिल ही दिल में हम लोग खुश होने लगे थे। ये भी था कि लंबी जलनदायक गर्मी के बाद थोड़ी बारिश की राहत मिलेगी। जिसको हमने हल्का हवा का झोंका समझने की भूल की वो एक भयानक तूफान निकला।

पर होना कुछ और ही था ! हम सारे भुवनेश्वर निवासी पुरी के लिए अधिक चिंतित थे क्योंकि पुरी को तूफान का पहला झटका लग चुका था। पहली बार इसका एहसास करीब 9 बजे हुआ जब बरसों पुराने लंबे लंबे वृक्ष एक-दूसरे से और बगल वाले दीवारों में टकराने लगे। थोड़े- थोड़े वृक्ष का पतन हुआ और थोड़े-थोड़े दीवार टूटे। ये बस 10 ही बजे की बात थी। 11 बजते- बजते स्थिति ऐसी लगने लगी थी कि जितना होना था हो डाला। हम दुबारा से इस ख्याति को पूरा करने में लग जाएंगे।

12 बजे परिस्थिति शांत हुई। लोग घर छोड़कर बाहर आने लगे। बहुतों ने सोचा कि तूफान निकल गई। लेकिन यही था तूफान के पीछे की निर्वात। यही था भूगोल के बस में “आई ऑफ द साईक्लोन” जो एक चलायमान साईक्लोन सिस्टम के केंद्र में करीब 30-40 किलोमीटर की दूरी तक विस्तृत रहती है। और जब तक ये किसी भी इलाके से गुजरती है तब बनी रहती है एक अजीब सी शांति। कुछ ही देर में ये भली भाँति सबको पता चल चुका था कि इसके बाद आने वाली है कयामत।

इसके बाद आने वाली हवाओं ने 180 किलोमीटर स्पीड वाले गाड़ी को भी टक्कर दे डाला। ये दूसरी बार की हवा इतनी जबरदस्त होने के दो कारण ये भी थे कि जब साईक्लोन का बायाँ हाथ धीरे-धीरे भूमि के संपर्क में आके कमजोर होने लगी थी, तब भी यह साईक्लोन का दायाँ हाथ समुन्दर से अपनी क्षुधा को भरते हुए भरपूर जलीय वाष्प और लिनताप का संयोजन कर रही थी। ऊपर से पहली वाली झोंके से बहुत सारे पेड़ टूटने से इन हवाओं के लिए प्रतिबंध होकर भी काफी कम हो गई थी। मिट्टी भी बारिश होने के कारण गीली हो गई थी तभी साईक्लोन के इस दायाँ हाथ ने पेड़ पक्षियों का कुछ नहीं छोड़ा। हाय हाय मचा के चली गई वो !

धीरे-धीरे आया सन्नाटा, दिल में एक भयानक सा हताशा और लगा कि हम सभी का इस दुनिया में कोई ठिकाना ही नहीं है। जिस सौंदर्य, वातावरण और परिवेश में हम जीते रहे, प्रकृति की एक भयानक मार ने उसको चंद पलों में खत्म कर दिया। और हमें ये भी समझाया कि हम हैं भी तो हैं कौन !

अब धीरे-धीरे जैसे-जैसे समय बीता, सरकारी और सिविल सोसाईटियों की जबरदस्त कोशिशों की वजह से हम जिंदगी के मूलस्रोत में वापस आए हैं। भुवनेश्वर में आने वाले नये लोगों को ये पता भी नहीं चलेगा कि जितने पेड़ आज दिख रहे हैं, वो एक साल पहले के हिसाब से आधा ही हैं। भुवनेश्वर में हॉकी वर्ल्ड कप होने के समय और आज के समय के बीच में अंतर दिखेगा उनको, जिन्होंने इस शहर में और इस शहर को जिया है। जिंदगी वहम है और रहेगा। केवल चलते-चलते वो कुछ अच्छी और बुरी यादें छोड़ जाते हैं। जब बुरी यादों में “फनी” के विध्वंस की चिंता रहेगी, वहीं अच्छी यादों में जिंदगी के संकल्प और कठिन स्थितियों से वापस आने की खामियां बनी रहेंगी।

सुक्तियाँ

अपने मन पर अंकुश लगाओ, तुम्हारे बहुत-से दुख स्वयं मिट जाएंगे।

परासर

यदि कुछ न हो तो प्रेमपूर्वक मिलकर ही अतिथि का स्वागत करना चाहिए

हितोपदेश

अंतर्दर्शी ही अवगुणों से अपनी रक्षा करता है।

केनोपदेश

निर्मल अंतःकरण को जो प्रतीत हो, वही सत्य है।

महात्मा गांधी

जो पुरुष हितकारी भोजन करता है, उसके लिए वह अन्न अमृत रूप हो जाता है।

महाभारत

अंजान मनुष्य का विश्वास न करो।

पुलिस चेतावनी

अन्याय को मिटाओ, लेकिन अपने-आपको मिटाकर नहीं।

प्रेमचंद

अनुभव बताता है कि आपातकाल में दृढ़ निश्चय ही पूरी सहायता करता है।

सेक्सपियर

बुढ़ापे की लाठी



श्री राजेश कुमार कटरे

कनिष्ठ अनुवादक

हर दिन की तरह आदर्श उस सुबह भी रामदयाल जी से जूझ रहा था। किसी भी कीमत पर न तो आदर्श मानने को तैयार था न रामदयाल जी झुकने को राजी थे। जबकि दोनों में कोई दुश्मनी नहीं थी। दरअसल चालीस साल का आदर्श अस्सी साल के रामदयाल जी का सबसे छोटा बेटा था। हाथ में तौलिया हिलाते और खीजते हुए आदर्श बोला, “पिताजी कृपा करके जिद न ही कीजिए। तीन दिनों से आपने नहाएँ नहीं हैं आज तो आपको नहाना ही पड़ेगा। चलिए जल्दी से आपको नहला दूँ फिर मुझे भी ऑफिस जाना है।”

जवाब में रामदयाल जी मूरत बने टीवी के सामने बैठकर केवल आदर्श को ही घूरते रहे। उनकी ऐसी बेबात वाली चुप्पी आए दिन आदर्श के गुस्से और खीज को बढ़ाती रहती थी। मगर आदर्श अपने नाम की ही तरह शायद एक आदर्शवान बेटा ही बना रहना चाहता था।

एक तरफ अपनी अधेड़ होती उम्र में अपने बच्चों को जवान होते देख रहा था, तो दूसरी तरफ अपने बूढ़े बाप को रोज के रोज यूँ ही बच्चा बनते भी देख रहा था। अपने तीन भाईयों में आदर्श सबसे छोटा था किंतु वही माता-पिता की देखभाल कर रहा था। मानों आदर्श अब अपने बूढ़े पिता का खुद ही पिता बन गया था और उधर बीमार मां जो लंबी बीमारी के कारण न ही बोलने, और न ही हिलने-डुलने में समर्थ थी जो कि बिस्तर पर थी वह भी अचानक एक दिन स्वर्ग सिधार गई।

जब तक वो रहीं रामदयाल जी के अंदर बुढ़ापे वाला बचपन चरम पर था। यह बात आदर्श की मां भी बीमार थी किंतु समझती थी दोनों को बुढ़ापे की अवस्था वाली बीमारियां घेरे हुई थी वह बेचारी औरत होने के कारण सहनशीलता की प्रतिमा बने अपने बहुत दुख आंसुओं में पी जाती थी और खुद को सम्हाल लेती थी। तीनों बेटों में बाकी तो कुछ देखभाल नहीं करते थे बस आदर्श ही सेवा-सुश्रुषा में लगा रहता था। आदर्श की मां ने धरती से सदा-सदा के लिए जाते-जाते आदर्श को उसके पिता रामदयाल जी का पिता और मां की भूमिका भी सौंप गई थी।

वैसे आदर्श को अपने पिता का पिता या मां बनना बुरा नहीं लगता था। पर सांसारिकता की अन्य जिम्मेदारियों के बीच रामदयाल जी के बचपने-सी हरकतों का लुत्फ उठाने का उसे समय नहीं था। बस कभी-कभी जब वह इस भूमिका को निभाते निभाते अपने बच्चों का पापा, अपनी पत्नी का पति और एक ऑफिस का कर्मचारी की भूमिका को निभाने में व्यस्त हो जाता था तो बहुत खीज जाता था। बदकिस्मती से आदर्श को अपनी जिम्मेदारियों से रोज ही सामना करना पड़ता था और वह रोज तंग आ जाता था और

खीजता था क्योंकि उसे रामदयाल जी की यानि पिताजी के पिता की भूमिका किसी न किसी दूसरी भूमिका पर भारी पड़ती थी।

एक दिन आदर्श के पिताजी जब अपनी किसी अनजान गुमनाम बीमारी के नाम पर नहाने को तैयार नहीं हुए तो आदर्श ने झल्लाते हुए उनका तौलिया वहीं उनके बिस्तर पर पटक और बोला, “पड़े रहिए आप यूँ ही अपनी जिद में रहिए, बोलने दीजिए दुनिया को कि बेटा किस हाल में रखता है आपको, आपकी सेहत पर वैसे भी कौन सा फर्क पड़ने वाला है मेरी परेशानियों से। मैं ऑफिस जा रहा हूँ मगर शाम तक कृपया शांति बनाए रखना, जो भी कांड करना है मेरे आने के बाद करना। बच्चों की परीक्षाएं चल रही हैं इसका लिहाज करना।”

आदर्श के पिता रामदयाल जी अब कुछ नरम पड़े और मासूम खरगोश सी आंखें बना कर बोले, “अरे तुम्हें क्या परेशानी है भाई। अपना इतना बड़ा घर है, बीवी-बच्चे भी तुम्हारे साथ ही रहते हैं। तुम्हारे सर पर अभी बाप का साया भी है। पिता की सेवा का मौका मिल रहा है और भला क्या चाहिए। हां बस तुम्हारी मां का साया नहीं है।” आदर्श के चेहरे पर खीज और झल्लाहट की जगह हताशा वाली हंसी ने ली वह बोला, गजब हैं आप पिताजी। हमसे पूछिए कौन सा साया आप दे रहे हैं और कैसी सेवा करा रहे हैं। वैसे मां की कमी पूरी करने का कोई इंतजाम तो नहीं सोच रहे हो। चलो सब कुछ छोड़ो बस अभी आप नहा लो तो बहुत अच्छा होगा।

रामदयाल जी अंततः मुस्कराए और घंटे भर की जद्दोजहद के बाद आखिर उनका नहाना-धोना हुआ। रामदयाल जी और आदर्श दोनों पिता-पुत्र की अजब जोड़ी थी। दोनों लड़ते रहते मगर एक दूसरे के बिना चैन किसी को भी नहीं था। आदर्श की मां के जाने के बाद से रामदयाल जी में कुछ ज्यादा ही निराशा भर गई थी। आखिर अब कोई था नहीं जिससे खुल कर दिल की बात कर पाएं। वक्त उतना स्फूर्तिदायी नहीं गुजरता था। जब तक आदर्श की मां रही उनके साथ जीवन जीने में इतने मस्त और व्यस्त रहे कि समय का पता ही नहीं चला कैसे उम्र के इस पड़ाव पर आ गए और कैसे आदर्श की मां चल बसी।

रामदयाल जी जब अपनी पत्नी के साथ जीवन जी रहे थे तब उनके बच्चे अपनी-अपनी बीवी-बच्चों के साथ अपनी दुनिया बसाने और सजाने में व्यस्त और मस्त थे। मगर जब अब रामदयाल जी अकेले पड़े तो उन्हें दुनिया अचानक बेगानी सी लगी। क्योंकि गुजरे वक्त में सब उन्हीं की तरह अपनी-अपनी दुनिया में व्यस्त थे। अब रामदयाल जी अपनी उस अकेले पड़ जाने वाली घबराहट में दूसरों की दुनिया का हिस्सा बनने से बेहतर दूसरों से उन्हें अपनी दुनिया समझने की अपेक्षा करना बेहतर समझते थे। और इसी कोशिश में उम्र के इस पड़ाव पर बुढ़ापे के दौर में वह कब अपने ही बच्चों के बच्चे बन गए, उन्हें पता ही नहीं चला।

ये बात बड़ी ही रोचक और सीख लेने लायक थी कि रामदयाल जी का बेटा आदर्श बड़ा ही समझदार था। वह समझता था कि पिताजी को पहले से ज्यादा अब उनकी जरूरत है और वह उनके साथ समय गुजारने की कोशिश भी करता था। मगर जीवन की व्यवहारिकताओं के आगे वह मजबूर था। वे व्यवहारिकताएं जो पिता के आगे बच्चे व्यस्त हैं नाम का एक टैग बन चुकी थी।

वैसे इस सांसारिकता का एक पक्ष यह भी है कि बूढ़े आदमी से कोई बात नहीं करना चाहता। इसलिए

अक्लमंदी ये है कि शादी के लिए सूरत से ज्यादा सीरत को तरजीह दीजिए और दिल पर जबान का असर जांचिए। क्योंकि जब आप बूढ़े हो जाएंगे, तब न वो खूबसूरती बचेगी न उसकी कोई रौनकता। तब काम सिर्फ सीरत और जबान आएगी। क्योंकि तब आपको चाहिए होगा कोई ऐसा जिसके पास आपको समझने की फुरसत हो।

खूबसूरती अर्थात् सुखद बुढ़ापे के लिए आपका वक्त के साथ बदलना और घर में अपने संबंधों को परिस्थिति के अनुकूल बनाए रखना बहुत जरूरी है। सिर्फ एक अलहदा रखी हुई स्थिर मेज न बनिए, घर के सजीव मिलनसार सदस्य बने रहिए। उम्र का बढ़ना प्राकृतिक है उसे कमजोरी और निराशा की जननी मत बनने दीजिए।

रामदयाल जी का बेटा अपने अकेले पड़े पिता को लेकर बेहद संवेदनशील था और पिता को भले ही अहसास न होने देता था किंतु वह उन पर पूरा ध्यान लगाए रहता था। यदि इस उम्र में आदर्श के पिता बचपन जैसी हठ करते तो भी इस पुत्र ने उसे स्वीकार किया उन्हें इस पड़ाव पर बच्चा ही स्वीकारा था। आदर्श क्योंकि साथ रहता था इसलिए पिता के सबसे करीब था। और उसी अनुपात में उसकी अपने पिता के लिए जिम्मेदारी का भाग भी वह तय कर चुका था। इसीलिए उनकी सभी जिंदगियों और ज्यादातियों के बावजूद साथ रहता और सब कुछ स्वीकार करता था।

बात रामदयाल जी की करें तो उनके लिए भी आदर्श सबसे छोटा होने के नाते दिल के सबसे करीब था। उसी से लड़ते-झगड़ते और उसी को अगर जरा सी खरोंच भी आ जाए तो अपनी सारी अनजान गुमनाम बीमारियां और कमजोरी भूल कर चिंता में पड़ जाते थे। मगर इस सब के बीच उन्हें कभी अहसास ही नहीं हुआ कि उनका छोटा सा आदर्श अब बच्चा नहीं रहा और दो किशोर बच्चों का छियालीस वर्षीय पिता है जिसकी अपनी भी एक अलग जिंदगी है।

अहसास होता भी तो कैसे आखिर रामदयाल जी की दुनिया तो उनके तीन बच्चों में सिमटी थी और उसके अलावा वो कुछ सोचते भी नहीं। लेकिन पिता की दुनिया अगर सिमट चुकी थी, तो बच्चों की अब भी फैल रही थी। और अगर वो तीनों ही पुत्र पिता की संपूर्ण दुनिया थे किंतु आदर्श ही उनकी फैलती हुई दुनिया का हिस्सा बना रहा।

एक दिन रामदयाल जी की उस सिमटी दुनिया से उनके दोस्त गोविंद त्रिपाठी जी उनसे मिलने घर आए। गोविंद जी काफी सक्रिय थे इसलिए कभी-कभी खुद ही आ जाते थे। कुर्सी पर बैठते हुए अपने दोस्त को डपटते हुए बोले, “रामदयाल तुम ये बिस्तर पकड़े हुए ही क्यों रहते हो। कभी-कभी सैर पर ही चले जाया करो। कुछ दिमाग तरोताजा हो जाएगा। आदर्श बता रहा था ऐसी कोई समस्या भी नहीं तुम्हें स्वास्थ्य भी सामान्य ही है फिर आपने कौन सी बीमारी पाले हो भाई।”

रामदयाल जी मुस्कुरा कर बोले, “अरे भाई मानता हूं बीमारी नहीं है कोई। मगर अकेले निकलने में डर लगता है कहीं गिर-पड़ गए तो, और वैसे भी आदर्श है न जब वह है तो हम क्यों निकलें अकेले। उसके साथ ही आते-जाते हैं।” कुछ चिढ़ते हुए गोविंद जी बोले, “अरे भाई तो उसे क्यों फंसाये रहते हो। उसे अब अपने बीवी-बच्चों के साथ घूमने दो।” गोविंद जी की इस बात से जरा नाराज होकर रामदयाल जी बोले,

“अरे भाई मेरे बेटे मेरी सेवा करते हैं तो इसमें समस्या क्या है। उन्होंने कभी शिकायत नहीं की। उन्हें मेरी सेवा करने में अच्छा लगता है तो हम क्यों न करवाएं सेवा। और पिता की सेवा बेटा ही तो करेगा।”

तभी आदर्श ऑफिस से आया और गोविंद जी के पैर छूकर उनके पास बैठ गया तभी गोविंद जी बोले आदर्श तुम अपने पिता को कहीं बाहर घूमने ले जाओ हवा पानी बदलेगा तो शायद इनकी सोच बदले। आदर्श कटाक्ष वाली मुस्कान से बोला इनकी तो हवा पानी ही बदलेगी हमारी तो हवा टाइट हो जाएगी। ऐसा नहीं है कि मेरे दोनों बड़े भाई विचार और विमर्श इनकी सेवा नहीं करना चाहते बल्कि उनके पास पिताजी के लिए मुझसे ज्यादा सुख-सुविधाएं हैं लेकिन पिताजी की कमजोरी है कि उनका रवैया हर बेटे के घर अलग रहता है। सच यह भी है कि उन दानों के पास समय की कमी है लेकिन रामदयाल जी की आदत आदर्श के पास रहने उसका प्यार और उससे सेवा करवाने की है। कभी कभार रामदयाल जी दूसरे बेटों विचार और विमर्श के घर भी जाते हैं तो उन्हें शहर की आबोहवा बर्दाश्त नहीं होती उन्हें उसी छोटे शहर में आदर्श के मोहल्ले वाले घर में ही अच्छा लगता है वहीं घर-बाहर और आदर्श के साथ रोज किच-किच में वे बहुत खुश रहते हैं। रामदयाल जी को भी आदर्श की व्यस्तता का अहसास हो चुका था।

चूंकि रामदयाल जी आदर्श के पिता हैं एवं यदि वह अन्य दो बेटे विचार और विमर्श से ज्यादा आदर्श को चाहते हैं, तो ऐसा नहीं कि वह उन दोनों से प्यार नहीं करते वास्तव में यह बढ़ती उम्र का प्रभाव है इस पड़ाव पर एक बीमारी ही कहें उन्हें पत्नी के मरने के बाद केवल आदर्श पर ही विश्वास हो गया है। जबकि माता-पिता का प्यार उनकी सभी संतानों के लिए बराबर होता है। एक दिन आदर्श कहीं बाहर टहलने गया था और बारिश शुरू हो गई। आदर्श को पिताजी के बारे में खयाल आया, वह उनके बारे में सोच-सोच कर एवं अपनी जीवन की आगामी जिम्मेदारियों का ध्यान करके खुद पर हंसते हुए एक पेड़ से टिक कर खड़ा हो गया और हाथों से टहनियों को सहलाने लगा।

जब बारिश रुकी तो आदर्श घर पहुंचा। जब तक रात हो चुकी थी पिताजी खाना खा कर सो चुके थे। कुछ सोचते हुए आदर्श ने अपने पिता के कंधे पर हाथ फेरा और अपने कमरे में सोने के लिए चला गया। अगली सुबह रोज की तरह अपने बूढ़े पिता जो अब उसके बच्चे से कम न थे उन्हें तैयार करने आदर्श पिता के कमरे में तौलिया लिए पहुंचा लेकिन आज उसके चेहरे पर खीज या सीकन नहीं बल्कि मुस्कुराहट थी।

मगर आदर्श को जब पिताजी कमरे में नहीं दिखे तो उसने आवाज लगाया, “पिताजी.....कहां चले गए.....” जवाब में बाथरूम से आवाज आई, “नहा रहा हूं.....” यह सुनकर आदर्श के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई और यही नहीं उसकी खुशी का साथ देने उसकी आंखों में आंसू भी निकल आए। अर्थात् आदर्श के पिता रामदयाल जी ने जो पत्नी के स्वर्गवास के बाद टूट चुके थे तथा खुद को बुढ़ापे में बहुत ज्यादा कमजोर बना बैठे थे अब खुद को संभालने का निर्णय ले लिए थे तथा उन्होंने सकारात्मकता को अपना लिया था। भले ही बुढ़ापे की लाठी संतान ही हैं लेकिन उसके पिता सामर्थ्य को पक्के मनोबल और सकारात्मकता से जीतना चाहते थे। अब आदर्श भी पिता की जिद्द और नकारात्मकता जाने के बाद खुशी से उनकी सेवा में समर्पित था।

कलयुगी रिश्तों की हकीकत



कुमारी बबिता मणि

कनिष्ठ अनुवादक

हम सभी अपने जीवन में अनेक रिश्तों के साथ जीते हैं, कहीं मां तो कहीं पिता, कहीं भाई तो कहीं बहन इत्यादि। या यूँ कहें तो हमारा पूरा जीवन ही कई प्रकार के रिश्तों से घिरा रहता है। लेकिन कभी आपने सोचा है कि इन रिश्तों की हमारे जीवन में अहमियत क्या है? हम सभी अपने जीवन में इतने सारे रिश्तों को लेकर क्यों चलते हैं? मैं बताती हूँ आपको कि इतने सारे रिश्तों का हमारे जीवन में क्या महत्व है। रिश्ते वो होते हैं जो हमें हर कदम पर संभलकर चलना सिखाते हैं, हमें समाज का बेहतर तरीके से सामना करना सिखाते हैं, अच्छे-बुरे की पहचान करवाना सिखाते हैं, जब कभी भी हम परिस्थितियों का सामना करते-करते थक जाते हैं तो ये रिश्ते ही हैं जो हमें इनसे लड़ना सिखाते हैं। हमारी खुशी में खुश होते हैं और जब भी हम दुखी होते हैं तो इनके चेहरे भी उतर जाते हैं। लेकिन ये सब हमारी सोच तक ही है क्योंकि हकीकत में हमारे जीवन से जुड़े सभी रिश्ते ऐसे नहीं होते हैं। केवल कुछ ही रिश्ते हमारे जीवन में ऐसे होते हैं जो हमारी खुशी में खुश और हमारे दुख में दुखी होते हैं और वो हैं हमारे माता-पिता। माता-पिता के अलावा कोई भी रिश्ता हमारे जीवन में सच्चा नहीं होता। लेकिन ये केवल मेरी भावनाएँ हैं क्योंकि हर इंसान के जीवन में कोई ना कोई ऐसा इंसान उसके माता-पिता के अलावा भी ऐसा होता है जो उसके माता-पिता से भी बढ़कर कर जाता है। किंतु यह अपवाद के रूप में ही केवल लिया जा सकता है क्योंकि अभी जो समय चल रहा है उनमें रिश्तों की हकीकत कुछ और ही है। हमारे माता-पिता को छोड़कर आज हर कोई एक-दूसरे से रिश्ता केवल किसी ना किसी मतलब से ही रखना चाहता है।

आज के रिश्तों की हकीकत ये हो चुकी है कि जहां फायदा नहीं वहां जाना नहीं। जिससे कुछ मिलने वाला नहीं उससे बात करना नहीं। इंसान बात भी उसी से करना पसंद करता है जिसमें कोई बात होती है। और तो और आज के समय में जो जितना दिखावा करना जानता है वो उतना ही लोकप्रिय रहता है। एक सच्चा और सादा जीवन जीने वाले व्यक्ति का कोई भी साथ नहीं देना चाहता है। रिश्तों में सच्चाई का कोई स्थान नहीं रह गया है। हर तरफ झूठ का बोलबाला है। क्योंकि सच को जानते सब हैं लेकिन सुनना कोई पसंद नहीं करता। एक और बात आज का दौर एक ऐसा दौर चल रहा है जिसमें हर इंसान बस यही चाहता है कि मैं जो चाहूँ केवल वो ही हो, मैं जो बोलूँ उसे सब ध्यान से सुने, मैं जो कहूँ वो सब करें लेकिन मैं किसी की बात ना मानूँ और ना ही मुझे किसी का कहा कुछ करना पड़े। अब आप ही बताइये कैसे निर्वाह किया

जा सकता है ऐसे रिश्तों के साथ? शायद इसीलिए इस युग को कलयुग कहा गया है। यहां कोई किसी का नहीं है। आज रिश्ते धर्म और जाति को देखकर नहीं जोड़े जा रहे हैं बल्कि स्थिति को देख कर जोड़े जा रहे हैं। आज इंसान उसके दरवाजे पर पहले जाना पसंद करता है जिसकी समाज में कुछ हैसियत होती है। बड़े लोगों से मिलना, बड़ी बातें करना आज एक आम बात बन गई है। भले ही ये बड़े हैसियत वाले लोग अंदर से एकदम खोखले हों, चाहे हजारों गलतियां करके बैठें हो कोई बात नहीं, आखिरकार ये बड़ें लोग हैं इनकी तो हर गलती भी इनकी शान होती है। अगर आपके पास पैसा है तो आपके बहुत सारे चाहने वाले रिस्ते नाते मिल जाते हैं। आज हर कोई बस इसी फिराक में लगा हुआ है कि कैसे सामने वाले का इस्तेमाल किया जाए।

हमारे पूर्वजों ने एक कहावत कही थी कि उगते सूरज को हर कोई सलाम करता है और आज के रिश्तों की हकीकत भी कुछ ऐसी ही है। इतना सब कुछ देखने और सुनने के बाद मैं सोचती रहती हूँ कि क्या आज रिश्ते इतने गैर गुजरे हो गए हैं कि इंसान बस अपना ही फायदा सोच रहा है। क्या इंसान को कभी ये ख्याल नहीं आता कि अगर ये रिश्ते-नाते ही हमारे जीवन में नहीं रहेंगे तो हम अपना रूतबा दिखाएंगे किसे? हां, हमारी दौलत और शोहरत को देखने वाला भी तो कोई होना चाहिए ना। लेकिन नहीं, आज किसी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन मेरे बारे में क्या सोचेगा। आज का इंसान तो बस एक विद्या जान रहा है या यूं कहे कि जानबूझ कर रहा है और वो है मतलबी रिश्ते बनाना।

शायद मेरा इतना सब रिश्तों को लेकर बोलना बहुतों को बुरा लगे क्योंकि ये जरूरी नहीं है ना कि हर किसी के जीवन में रिश्ते गलत ही मिलें हो। कुछ लोग मेरी बातों से सहमत हो भी सकते हैं और कुछ नहीं भी क्योंकि हर इंसान अलग-अलग तरीके से रिश्ते-नातों का सामना करता है। एक और बात आज के रिश्तों को देख कर जो विचार मेरे मन में आता है वैसा सबके मन आता है कि नहीं ये जरूरी नहीं है। कोई बात नहीं, चलो मेरे द्वारा यह लेख लिखे जाने के पीछे एक छोटी सी कहानी है जिससे मुझे यह लेख लिखने की प्रेरणा मिली, आईए आपको बताते हैं।

यह कहानी मेरे अपने ही परिवार से जुड़ी हुई है। एक बार की बात है, जब हम सब भाई-बहन बहुत छोटे थे। उस समय हमारा परिवार बहुत ही ज्यादा आर्थिक तंगी से गुजर रहा था। हमें कोई भी काम करने से पहले एक बार सोचना पड़ता था। लेकिन जिस समय हमारे घर की आर्थिक हालत ठीक नहीं थी ठीक उसी समय हमारे कुछ रिश्तेदार बहुत ही अच्छा जीवन जी रहे थे। और वो अपने इतने खास रिश्तेदार थे कि आपको मैं बता भी नहीं सकती। वो जब भी हमारे यहां आते, हमें अपनी दौलत और शोहरत का दबदबा दिखा कर ही जाते लेकिन मदद करने कोई नहीं आता। फिर भी हम किसी को कुछ नहीं कहते क्योंकि हमें उनकी बातें उस समय समझ में नहीं आती थी। बस मैं अपनी माँ को चुपचाप उनकी बातें सुनते देखती थी। लेकिन जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती गई मुझे भी सब समझ में आने लगा। फिर भी हम सब भाई-बहनों ने किसी को कुछ नहीं कहा और अपने संघर्ष पर ध्यान देते रहे। धीरे-धीरे समय बदला और हम सब भाई बहन अपनी लाईफ में सेटल्ड हो गए। लेकिन जैसे ही हमारे हालात बदले हमने देखा कि कुछ ऐसे लोग भी हमारे घर आने लगे

जिनको मैंने पहले कभी भी नहीं देखा था। वो लोग आते और अपना परिचय खुद ही देकर जाते, हमें उनसे पूछने की जरूरत ही नहीं पड़ती। जो लोग कभी हमारे यहाँ आने के बाद अपनी दौलत और शोहरत का रूतबा दिखाया करते थे वो भी अब मधुर आवाज में बात करने लगे।

ये सब देख कर तभी से मेरे मन में रिश्तों को लेकर कुछ अजीब सी भावनाएँ उठने लगी। और जैसे-जैसे हम और भी आगे बढ़ते गए हमने पाया कि ये जो भाव रिश्तों को लेकर मेरे मन में उठता रहता था वो केवल एक भाव नहीं बल्कि आज के समय की एक कड़वी सच्चाई है। इंसान वास्तव में ऐसे ही रिश्ता जीना पसंद करता है। और उसके बाद जब इंसान किसी मुसीबत में पड़ रहा है तो उस समय उसे अपने रिश्तेदारों की याद आ रही है। लोग ये तो बोलने में एक मिनट भी नहीं सोच रहे हैं कि किसी ने मेरे लिए कुछ नहीं किया लेकिन ये कोई भी नहीं सोच रहा है मैंने किसी के लिए क्या किया। कहा जाता है कि कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है ठीक वैसे ही किसी की मदद पाने के लिए किसी की मदद करनी भी पड़ती है। प्रकृति का नियम है एक हाथ दो एक हाथ लो। अगर किसी का प्यार पाना चाहते हो तो पहले प्यार बाटना भी तो आना चाहिए ना। ऐसा थोड़े ना है कि तुम किसी को गाली दोगे तो वो तुम्हे प्यार देगा। आज का समय ही ऐसा चल रहा है कि जैसा करोगे वैसा भरोगे।

इतना सब कुछ रिश्तों के बारे में मैंने लिखा है वो बस इसलिए क्योंकि मैंने अपने जीवन में कुछ ऐसा ही फेस किया है। सब ऐसा सोंचे यह जरूरी नहीं है। मैं ये भी नहीं कहना चाहती कि हमारे जीवन से जुड़े सारे रिश्ते ऐसे ही होते हैं। नहीं, हमारे जीवन में कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो अपने आप से भी ज्यादा हमें महत्व देते हैं। क्योंकि अगर हमारे जीवन में सभी रिश्ते ही खराब और मतलबी लोगों से भरे मिल जाएं तो जीवन काटना ही मुश्किल हो जाए। कुछ ऐसे भी रिश्ते हैं हमारे जीवन में जिनके दम पर हमें जीवन में आगे बढ़ने का हौसला मिलता है। लेकिन केवल कुछ लोगों के अच्छा होने से ही तो संबंध अच्छे नहीं हो सकते हैं ना। क्योंकि ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती है। जिस प्रकार ताली बजाने के लिए दोनों हाथों की जरूरत पड़ती है ठीक उसी प्रकार से संबंधों का अच्छी तरह से निर्वाह करने के लिए सबका अच्छा होना जरूरी है। जिस दिन इंसान ने किसी ने मेरे लिए क्या किया को सोचना छोड़कर ये सोचना शुरू कर देगा कि मैंने किसी के लिए क्या किया है उस दिन रिश्तों का निर्वाह करना बहुत ही आसान हो जाएगा। सबसे पहले लोगों को ये समझना होगा कि रिश्ते मतलब के लिए नहीं बल्कि एक-दूसरे की खुशी के लिए होने चाहिए उस दिन संबंधों में एक अलग ही अपनापन देखने को मिलेगा। अक्सर ये सुनने को मिलता है कि अरे देखो ना वह तो आज बहुत ही प्यार से मुझसे बात कर रहा था, जरूर उसको मुझसे कुछ करवाना होगा या ये सुनने को मिलता है कि अरे आज तो फलाने व्यक्ति मेरे से बड़ा अदब से बात कर रहा था लग रहा है कि मुझे कहीं फसाएगा इत्यादि इत्यादि। लेकिन व्यक्ति यह नहीं सोच पाता है कि आज के इस ब्यस्त जीवन में किसी को किसी चीज की कमी नहीं है, बस कमी है तो चंद शब्द प्यार की। और अपने उस ब्यस्त समय में से अगर कुछ पल निकाल कर कोई आपसे थोड़ा बात कर ले रहा है तो इसका ये हरगिज मतलब नहीं की वो किसी जरूरत वस आपसे बात कर रहा है। लेकिन लोगों का क्या उन्हें तो हर बात में बस कुछ मतलब दिखता है।

रिश्तों के उपर इस लेख को लिखने के पीछे की मेरी जो सोच है वो मेरी खुद की है सब ऐसा सोचते हैं यह जरूरी नहीं है फिर भी अपने इस लेख के माध्यम से मैं वर्तमान में रिश्तों की जो दशा है उसको उजागर करना चाहती हूँ और साथ ही साथ मैं उन सभी लोगों, जो किसी से रिश्ता उसके अच्छे हालात, उसकी दौलत या शोहरत अथवा समाज में उसकी ऊँचा पद देख कर करते हैं, से यह निवेदन करना चाहती हूँ कि किसी से भी कोई रिश्ता मतलब या स्वार्थ के खातिर मत जोड़िए। क्योंकि अगर ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब इंसान और पत्थर में कोई फर्क नहीं रह जाएगा। हमेशा अपनी जरूरत पर ही लोगों से प्यार और इज्जत से बात मत करिए कभी-कभी निःस्वार्थ भाव से भी कुछ पल अपनों के साथ बिताईए ताकि रिश्तों में और कुछ नहीं तो कम से इंसानियत तो बची रही है क्योंकि कहा भी गया है कि हम सुधरेगे जग सुधरेगा अर्थात् जब हम स्वयं सही रहेंगे तो हमें सारा जग सही दिखेगा। इसलिए अगर रिश्तों में मिठास लानी है और मतलब को हटाना है तो उसकी शुरूआत सबसे पहले हमें स्वयं से ही करनी होगी।

सुक्तियाँ

बुद्धिमान आदमी धोखा और अपमान की बात किसी अन्य पर प्रकट नहीं करता।

हितोपदेश

पवित्र और दृढ़ अभिलाषा सर्वशक्तिमान है।

विवेकानंद

अवसर को खो दिया तो समझो सफलता को खो दिया।

चार्ल्स

असत्य विजयी भी हो जाए, तो भी उसकी विजय अल्पकालिक होती है।

लियोनार्ड

वे कभी असफल नहीं होते, जिनकी मौत महान उद्देश्य के लिए होती है।

बायरन

अहंकार छोड़े बगैर सच्चा प्रेम नहीं किया जा सकता।

विवेकानंद

जहां अज्ञान वरदान हो वहां बुद्धिमानी दिखाना मूर्खता है।

प्लुटार्क

आंखो देखी सांच, बाकी सब झूठ।

सूरदास

एक फौजी के जज्बात



श्री अनुभव कुमार सिंह
डीईओ

(यह घटना मेरे एक अजीज मित्र की आपबीती है।)

यह बात कुछ दिन पहले की है सर्दियां शुरू हो चुकी थी। मैं काम की तलाश में अपने गांव से जम्मू कश्मीर चला गया। वहां मुझे सुरक्षा गार्ड के तौर पर एक ए.टी.एम. में काम मिला। सर्दियों का समय था और दे रात एक व्यक्ति वहां पैसे निकालने आया, वह व्यक्ति केवल सौ रुपये निकाल कर चला गया। दूसरे दिन वह फिर से आया और फिर से सौ रुपये निकाला। पैसे निकालने के क्रम में उसे एक फोन कॉल भी आया, जिसे सुनकर यह प्रतीत हुआ की वह भारतीय सेना का जवान है। उस व्यक्ति का प्रतिदिन सौ रुपये निकालने का सिलसिला यूं ही चलता रहा।

एक दिन मैंने उससे हिम्मत करके यह बात पूछ ही लिया, “आप रोज यहां आते हो और सौ रुपये निकाल कर चले जाते हो, अगर आज चाहो तो ज्यादा पैसे निकाल सकते हो जिससे आपका खर्च ज्यादा दिनों तक चल सकता है।” इस पर उस फौजी ने कहा, “जवान, मैं जब भी इस अकाउंट से पैसे निकालता हूं तो मेरी पत्नी या मेरे घर वालों को रोज एक मैसेज जाया करता है, जिससे उन्हें यह पता चलता है कि मैं जिंदा हूं और मैं फिर बिना किसी फिक्र के अपने देश की रक्षा करता हूं, बस इसलिए रोज सिर्फ सौ रुपये।”

जज्बातों को पिघला कर
रगों में लोहा भरना पड़ता है।
तब जाकर एक माँ का लाल
भारत माँ का फौजी बनता है।

एक सवाल आपसे



श्रीमती शांतिलता सेठी

वरिष्ठ लेखाकार

एक दिन मैं ऑटो रिक्शा में बैठकर दफ्तर जा रही थी। गर्मी का मौसम था। जल्दबाजी में ऑटोरिक्शा के पीछे एक कार ने टक्कर दे दिया।

ऑटो वाला नीचे उतरा और चिल्लाने के बदले चुपचाप ऑटो में बैठ गया। उस समय ट्रॉफिक बन्द था। मैंने ऑटो वाले से पूछा-“क्या हुआ? कार में कौन था? तुम्हारे ऑटो को तो कोई नुकसान नहीं हुआ ना?”

ऑटो वाला बोला- हाँ, हुआ है। मैं बोली, “फिर !”

ऑटो वाला बोला, “माँ जी, 85 साल का बुजुर्ग आदमी गाड़ी चला रहा है। उनको ठीक से दिखाई नहीं देता होगा। गाड़ी तो शायद 25 साल पुरानी होगी।” मैं बोली, “चलो छोड़ो इस बात को। मुझे ऑफिस पहुँचने में देर हो जाएगा।”

उस वक्त ट्रॉफिक छोड़ दिया। कार में जो बुढ़ा आदमी कार चला रहा था उनका चेहरा थोड़ा जाना पहचाना सा लगा। कार हमारे बाँए तरफ से जाकर थोड़ा दूर जाकर रुक गई। मेरे कहने पर ऑटो वाला उस बृद्ध व्यक्ति की गाड़ी के पास रुका। मैं देखी कि वह बृद्ध व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि मेरे दोस्त राहुल के डैडी उमेश कुमार पाढ़ी थे। जाने माने संगीतकार। मेरे बच्चे उनके पास गाना सीख रहे थे। आई.आर.सी. विलेज में बड़ा बंगलों। मैं तुरन्त बोली मौसा जी आप मुझे नहीं पहचाने। मैं शांति हूँ। मेरा बेटा और मेरी बेटी आपके पास गाना सिख रहे थे।

मौसा जी कुछ नहीं बोले। उनके हाथ काँप रहे थे और होठ भी। मैंने मौसा जी को कार की खिड़की खोलने को बोला और प्रणाम किया। मौसा जी समझ गए कोई अपने लोग है। इसलिए वह मुझसे बोले कि मेरे पीछे की सीट पर ग्लूकोज का पैकेट रखा है, थोड़ा दे दीजिए। मैंने पैकेट खोलकर उनको एक चम्मच दिया। एक चम्मच खाने के बाद पाँच मिनट के अंदर उनको और अच्छा लगने लगा। मौसा जी बोले आप लोग जाईए अब मैं ठीक हूँ। मैं बोली, “मौसा जी आप कहाँ जा रहे हैं?” मौसा जी बोले, “कैपिटल हॉस्पिटल।” मैं पूछी क्यों? मौसा जी बोले, “कल रात को थोड़ा साँस लेने की दिक्कत हुई इसलिए चेकअप करवाने जा रहा हूँ।”

मैं बोली कि मौसा जी मुझे भी वहां ही जाना है, चलिए मैं भी आपके ही साथ चलती हूँ। मौसा जी की गाड़ी स्टार्ट नहीं हुई इसलिए मैं उनको अपने ऑटो में साथ ले गई। चेकअप करवाके, सब इंतजाम करने के बाद मौसा जी को घर छोड़ने के लिए ऑटो वाले से बोली और दफ्तर चली गई।

दिन में 1.30 बजे मेरे ड्राइवर ने फोन किया मैडम जल्दी आईए मौसा जी की तबियत ज्यादा बिगड़ती जा रही है। मैं दफ्तर से छुट्टी लेकर अस्पताल चली गई। वहां जाकर देखा कि मौसा जी को डॉक्टर कटक भेजने को बोल रहे थे। मौसा जी होश में थे। मैं मौसा जी से पूछी सर आपके यहाँ कोई है? मौसा जी बोले हाँ, है। मैं पूछी कि उनका पता बताईए और फोन नंबर दीजिए। मौसा जी अपना डेबिट कार्ड मुझे दे दिए और पिन नंबर भी बता दिया। मुझे समझ में आ गया। मैं मेरे बेटा को बुलायी और मौसा जी को आदित्य केयर अस्पताल में भर्ती करवाई। कुछ दिन के बाद मौसा जी अच्छे हो गए। तबियत ठीक होने के बाद जब मैं घर जाने की बात की तो उन्होंने इनकार कर दिया और बोले कि बेटी तुमने मेरे लिए इतना काम किया और एक एहसान कर दो। मैं पूछी, “सर, आप बोलिए मैं कोशिश करूंगी।” मौसा जी बोले, “क्या करूँ, मेरा एक बेटा है। वह कनाडा में नागरिकता ले लिया है। वह बहुत अच्छा है लेकिन उसकी बीवी कनाडियन है। अभी उसको दो बेटा हो गया है। मौसा जी रूके नहीं। अपना गम छुपाने के लिए ऐसे ही बोलते रहे।” मैं बोली, “सर अभी आप कहाँ जा रहे हैं?” मौसा जी बोले, “मैं कैपिटल हास्पिटल जा रहा हूँ।” मैं पूछी क्यों? मौसा जी बोले कल रात को मुझे साँस लेने में दिक्कत होने लगी। इसलिए मैं थोड़ा चेकअप करवाने जा रहा हूँ। मैं बोली सर मैं भी जा रही हूँ। इसलिए चलिए साथ में चलेंगे।

मुझे मालूम पड़ गया था मौसा जी को रात को दिल का दौरा जरूर आया होगा। इसलिए मैं उन्हें साथ लेकर गई। मेरा ऑटो ड्राइवर मौसा जी को चेकअप करवाके उनके घर छोड़ने के लिए बोली और मैं दफ्तर चली गई। मौसा जी बोले मुझे रसूलगढ़ में एक वृद्धाश्रम है, वहाँ मुझे छोड़ दीजिए। मेरे दो दोस्त भी वहाँ रहते हैं। उसके बाद मौसा जी बोले कि ये लो मेरी चाभी, मेरे घर जाओ और एक फोटो फ्रेम में फोटो लगा हुआ है उसमें मेरे बेटे की तस्वीर लगी है मुझे लाकर दे दो और कुछ नहीं। मैं मौसा जी के घर से फोटो लाकर दी उसमें उनके बेटा, पोता, पोती और एक बूढ़ी औरत की फोटो भी थी।

मैं मौसा जी से पूछी कि वह कौन है। मौसा जी बोले वह मेरी धर्मपत्नी है। अब वह इस दुनिया में नहीं है। मैं मौसा जी को बोली कि मैं आपके बेटे से बात करूंगी। आप आपके घर में रहिएगा। कुछ दिन मेरा आटो ड्राइवर आपके साथ रह जाएगा। बाद में देखेंगे कि क्या हो सकता है। मेरे ऑटो ड्राइवर को मैं मौसा जी के घर में रहने के लिए समझा कर भेज दी।

मैं दफ्तर में मेरे सहकर्मी संजय के साथ मौसा जी के बारे में बात की। मुझे मालूम था ऐसी संस्थाएँ हैं जो कि घर के हर काम में मदद करते हैं। हाँ, एक रजिस्टर्ड संस्था है। वहाँ से आपको लोग मिल जाएंगे। वह लोग केवल सुबह 8 बजे से शाम 8 बजे तक रूकेंगे। मैं बोली कि क्या भरोसेमंद लोग मिलेंगे। उसने बोला, हाँ। मैं संजय को मौसा जी के बारे में सबकुछ बताई। संजय की मदद से एक पच्चीस साल का लड़का राम को मौसा जी की मदद के लिए रखा गया। राम दिल का बहुत अच्छा था बड़े लोगों की इज्जत करना

कोई उससे सिखे। मौसा जी भी उसके साथ खुश रहने लगे। राम को गाड़ी चलाना आता था। इसलिए उन दोनों को आने-जाने में कोई दिक्कत नहीं हुआ। राम को रात को जाना पड़ता था। इस वजह से मौसा जी थोड़ा परेशान होते थे। राम की आदत मौसा जी के उपर इतनी हाबी हो गई कि मौसा जी उसके अंदर अपनापन महसूस करने लगे। ऐसे ही एक साल बीत गया। एक दिन मौसा जी की तबीयत खराब हो गई। उन्होंने ने अपने बेटे से फोन पर बात की और अपनी तबीयत के बारे में बताया लेकिन उसको कोई फर्क नहीं पड़ा। उनका बेटा बोला पिताजी आप रसूलगढ़ में एक वृद्धाश्रम है। वहाँ आपके दो दोस्त रह रहे हैं आप वहीं जाके रहिए। मैं हर महीने आपके लिए रुपये भेज दिया करूँगा। उनलोगों के साथ मैं बात करूँगा। वहाँ आपको कोई तकलीफ नहीं होगी।

यह सुनकर मौसा जी बोले, “बेटा बहुत-बहुत धन्यवाद। इतना करने का कोई जरूरत नहीं है। और यही कहकर फोन रख दिया।” बेटे के साथ बात करने के बाद मौसा जी को फिर एक बार दिल का दौरा पड़ा। मौसा जी को अस्पताल में भर्ती किया गया। इस बार मुझे थोड़ा घबराहट हुआ था कि कहीं कुछ हो ना जाए। अगले दिन सुबह सात बजे राम ने फोन किया माजी आप थोड़ा जल्दी आ जाईए। उस दिन शनिवार था। मैं तुरंत पहुँच गई। अस्पताल में पहुँचकर देखी कि एक जज और मौसा जी के कुछ दोस्त आए थे। मौसा जी अपनी सारी संपत्ति राम के नाम कर दिए थे। यह देखकर मेरी आँखों में आँशू आ गया। मैं मौसा जी को बोली कि मौसा जी आपके बेटे बाद में आएंगे और राम की जिंदगी खतरे में पड़ जाएगी। मौसा जी बोले इसका भी सारा इंतजाम मैंने कर दिया है। राम को कोई तकलीफ नहीं होगा। यह बात सुनकर मैं लौट आई।

मौसा जी की तबीयत ज्यादा बिगड़ने लगी। इतने साल में डॉक्टर ने सर्जरी करना उचित नहीं समझा और दवाई देकर ही इलाज किया। लेकिन दो दिन बाद उनका देहांत हो गया। देहांत की खबर मिलने के एक महीने के बाद उनका बेटा वापस आया और राम को घर से निकलने के लिए बोला। राम उनको सारे कागजात दिखाया और नहीं मानने पर उसने जज और उन लोगों जो मौसा जी के दोस्त थे को बुलाया तथा उनकी बात मौसा जी के बेटे से कराई। मौसा जी होशो हवास में रहकर यह सब काम किए हैं। जज साहब ने मौसा जी के बेटे से पूछा कि तुम पिताजी के मरने के बाद क्यों आए हो। तुम्हारे लिए वह कितना तरसे, दुख में कितना तड़पे। अब संपत्ति के लिए आ गए। अब तुम लौट जाओ अपने घर और परिवार के पास। राम ने बेटे का फर्ज अदा किया है। पिता की चिता में आग लगाया इसलिए वही असली हकदार है। जज साहब भी वही बोले। जज साहब बोले कि माता-पिता के प्यार को उनकी कमजोरी मत समझो। उनको अपनी धन-दौलत नहीं चाहिए, उनकी अपनी औलाद जैसा प्यार चाहिए। मुझे यह सुनकर अच्छा लगा। लेकिन एक सवाल का जबाव मैं अब तक ढूँढ रही हूँ। यह सवाल आपके लिए भी रखती हूँ। एकलौते बेटे को कनाडा नौकरी करने के लिए भेजना क्या मौसा जी की गलती थी?



भारतीय संस्कृति



श्री चार ओराम

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

भारतीय संस्कृति अपनी प्राचीनता के लिए ही नहीं बल्कि अपने जीवनादर्शों के लिए भी प्रसिद्ध है। संयम संस्कृति का मूल्य है। विलासिता, निर्बलता और अनुकरण के वातावरण में न संस्कृति का उद्भव होता है और न ही विकास का।

भारतीय संस्कृति धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक पक्षों का उद्घाटन करती है। यह समन्वय की भावना है। अनेकता में एकता का संदेश भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण देन है।

मानवतावाद का संदेश भारतीय संस्कृति की अन्य उल्लेखनीय विशेषता है। इसका मूल्य सिद्धांत है “जियो और जीने दो।” दक्षता, क्षमता, सहनशीलता, यश, परोपकार, अहिंसा, उदारता आदि मानवीय गुणों की देन में भारतीय संस्कृति का ही हाथ रहा है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण भारत आज भी विश्व के मंच पर अपनी गरिमा बनाए हुए है। यह देश-भक्ति तथा नैतिकता का पाठ भी पढ़ाती है और आदर्श चरित्र के निर्माण पर बल देती है। स्वतंत्र विचार पद्धति को महत्व देकर मनुष्य के स्वतंत्र विकास में सहायता देती है। यही संस्कृति सारे विश्व में भारत की एक अनमोल देन है।

सुक्तियाँ

जो आगा-पिछा सोचकर काम करते हैं, वह सदा फायदे में रहते हैं।

ईसय

महान कार्य करने के लिए पहली जरूरी जीज है-आत्मविश्वास।

जानसन

अंधविश्वास पागलपन का दूसरा नाम है।

एनी बेसेंट

बिना अनुभव के कोरा शाब्दिक ज्ञान अंधा है।

विवेकानंद

जटा रूप को, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राण को, असूया धर्मचर्या को, क्रोध श्री को, काम लज्जा को और अभिमान सबको हरता है।

विदुर नीति

बदलते रिश्ते



श्री सुन्दर लाल साव

कनिष्ठ अनुवादक

आज लोग कहते हैं कि दुनिया में परिवर्तन हो चुका है या हो रहा है। कई उदाहरण दिए जाते हैं की लोगो की भावनाओं, विचार रहन-सहन में परिवर्तन आ गया है। समाज में परिवर्तन आ गया देश बदल गया लोग सभ्य हो गए हैं। जब हमारा देश 15 अगस्त 1947 में अंग्रेजों के चंगुल से आजाद हुआ तब हमारी स्थिति दयनीय थी। हमारे समाज या कहे देश की 90 प्रतिशत आबादी गरीबी की अवस्था में रह रही थी। सरकारों द्वारा कई योजनाएं चलाई गयी और समाज में व्याप्त कमियों को दूर किया गया। धीरे-धीरे समाज विकास की ओर बढ़ा, लोगो में परिवर्तन आया। एक धर्म का प्रेम दूसरे धर्म के लिए एक जाति का प्रेम दूसरे जाति के लिए उमड़ कर आया। पर इन सब के बीच अगर कुछ दूर भी धीरे-धीरे होते गया वह है अपनो से अपनापन। कल हम भले ही खाने के लिए तरसते थे, पर संयुक्त परिवार में विश्वास रखते थे। एक-दूसरे के दुःख को अपना दुःख और दूसरे की खुशी को अपनी खुशी मानकर जीते थे। लाख मजबूरियां आने पर भी अपनो के बीच कड़वाहट की कोई जगह नहीं थी। एक भाई यदि कमाता था तो दो और छोटे भाई आराम से उनपर निर्भर रहकर अपना कैरियर बनाते थे। ये परम्परा 90 के दशक तक भली भांति निभती हुई दिखती है लेकिन बाद के वर्षों में स्वार्थ और एकल(न्यूक्लियर) परिवार की अवधारणा ने सारे रिश्तों का स्वरूप बदल दिया। बदलते रिश्तों की हकीकत को मैं अपनी आँखों देखी घटना के सहारे अपने शब्दों में ब्यान करने की कोशिश कर रहा हूँ, जो बहुत ही मार्मिक घटना है। आपको आज की आधुनिकता के दौर में बदलते रिश्तों की हकीकत स्पष्ट होती दिखाई देगी। रिश्तों पर आधारित दो पंक्ति हरिवंश राय बच्चन की कविता की आज बहुत ही प्रासंगिक लगती है-

मकान चाहे कच्चे थे

लेकिन रिश्ते सारे सच्चे थे।

रिश्तो की मान-मर्यादा अब शायद किताबों में ही दिखती है। रिश्ते में जो अपनापन हम ढूँढ़ते हैं शायद वह नहीं दिखता है। समय के परिवर्तन के साथ-साथ रिश्तों के मायने भी बदल गए। जितने हम विकास की ओर बढ़ते गए रिश्तो का पतन होता गया, अपनों में दूरियां दिखीं। रामायण में हमने देखा की किस तरह राम के वनवास पर उनके भाई लक्ष्मण स्वैच्छिक रूप से जाने को तैयार हो गए। परन्तु आज भाई-भाई को मदद भी स्वैच्छिक रूप से नहीं करता जब तक भाई न बोले मुझे मदद की जरूरत है। आज भी मुझे याद है मेरे एक

मित्र रमेश है। उनके तीन भाई(सुशील,अखिल,अशोक) जो उनसे बड़े हैं। उनके पिताजी अब नहीं रहे, जब पिताजी उनके थे। तब उन्होंने उनकी पढ़ाई के लिए अपनी कमाई का एक एक पैसा लगाया। उन्होंने अपने बड़े बेटे सुशील को डॉन वास्को विधालय में दाखिला दिलवाया तथा बाकी दो बेटे को भी अच्छे विधालय में दाखिला दिलवाया था। रमेश अभी घर पर ही पढ़ता था। उन्हें अपने बड़े बेटे सुशील पर बड़ा नाज था। आस-पड़ोस में कहा करते थे कि देखना एक दिन ऐ मेरा बेटा मेरा नाम रौशन करेगा। पर उन्हें क्या पता था कि जिसे आज वह इतना प्यार कर रहे हैं, कल वही इनके न रहने पर अपनी माँ के साथ ऐसा व्यवहार करेगा। बड़े बेटे के पीछे वह इतना व्यय कर चुके थे कि उन्हें छोटे बेटे को सरकारी विधालय में दाखिला दिलवाना पड़ा। उनका बड़ा बेटा सुशील जब पढ़ाई पूरी कर लिया उसे पास की एक की फैक्ट्री में पर्यवेक्षक(सुपरवाइजर) का काम मिला। यह 1998 की बात है तब यह बड़ी बात समझी जाती थी। दो वर्ष बाद उनकी शादी उनके पिता के मैजूदगी में हुई।सारा परिवार बड़े मिल-जुलकर रहता था। और कुछ वर्ष बाद उनके छोटे बेटे तीसरा पुत्र अशोक की भी शादी हो गयी। अशोक की शादी सुशील के ससुराल में ही उनकी पत्नी के चाचा के लड़की से हुई। लड़की का नाम सीमा है। दोनों भाईयों की बीवियों का मायका एक जगह होने से उनमें मेल-मिलाप अच्छा रहता था। धीरे-धीरे समय बीतता गया रिश्ते भी अच्छी चल रही थी। लेकिन जिंदगी ने करवट ली अशोक की शादी के कुछ दिन बाद ही उसकी पत्नी सीमा का बिछिया (पैर की अंगूली की अंगूठी) खो जाती है, सुबह होते ही घर में हंगामा शुरू होता है और अंगूठी चोरी का शक अपने सास पर करती है। वह अपने पति अशोक से कहती की माँ ने मेरे अंगूठी चुराई है। अब अशोक तम तमाता हुआ घर में माँ के पास जाता है और बोलता है माँ सीमा की अंगूठी कहाँ गई माँ बोलती है, बेटा मैं नहीं जानती, मैंने अंगूठी को देखा भी नहीं। उस समय तक बड़ा बेटा सुशील भी वही था, परन्तु उसने अपने भाई का ही साथ दिया और वह भों माँ से झगड़ा कर अपनी पत्नी को लेकर गोरखपुर चला जाता है। अशोक कहता है तुम्हारे सिवाय कोई और घर में है ही नहीं, माँ के लाख कहने पर भी अशोक नहीं मानता है और उसी समय उसकी पत्नी माँ पर हाथ उठाती है पर उसी समय उसका छोटा बेटा आ जाता है और रोक लेता है। दूसरे दिन वह अपनी पत्नी को लेकर हल्दिया चला जाता है। माँ के प्रति एक बेटे का ऐसा व्यवहार वह भी एक छोटी सी चांदी की अंगूठी के लिए और जो माँ ने ऐसा किया न हो उससे उन्हें काफी चोट पहुँची और कई दिनों तक बीमार रही। अब सबसे छोटा बेटा और मझिला बेटा अखिल पर ही घर की सारी जिम्मेदारी आ चुकी थी। धीरे-धीरे समय बीतता गया माँ के अंदर जो बेटे के दुर्व्यवहार का घाव भरा ही था कि उन्हें दूसरा आघात झेलना पड़ा। रमेश के पिता जी का देहांत 2011 में हो जाता है। अब रिश्तों की असली हकीकत दिखाई देने लगती है। अपने पिता के सारे क्रिया-कर्म रमेश ही उधार मांगकर करता है। सुशील और अशोक आते तो है पर उसका सहयोग नगण्य रहता है। रमेश ही घर का सारा कार्य करता और सब तरह के कार्यों का फैसला लेता है या यूँ कहे लेना उसकी मजबूरी बन जाती है। ऐसी परिस्थिति में भी अशोक की पत्नी देखने तक नहीं आती है। इस बात का उन्हें बड़ा दुःख होता है। कुछ दिनों के बाद सभी लोग अपने अपने कामों पर चले जाते हैं। धीरे धीरे समय बीतता गया और मुश्किलें बढ़ती गयीं। कहा जाता है जब अपने साथ न दे तो पराए भी ठोकर मारने के लिए तत्पर रहते हैं। रमेश के पिताजी तीन भाई थे, जिनमें एक सबसे बड़े भाई

अविवाहित थे, वह अभी जिंदा थे। बाकी दोनो भाईयों की मृत्यु हो चुकी थी। अभी रमेश के घर में सारी परेशानियां चल ही रही थी की इसी बीच उनके बड़े पिताजी के बेटा अविनाश बंटवारे के लिए लड़ने लगा था। तब रमेश ने उनके बड़े भैया का घर जिसमें वह गोरखपुर जाने से पहले रहा करते थे, वह घर बंटवारे में घर उनके बड़े पिताजी के लड़के के हिस्से में चला जाता है। जिसकी जानकारी मिलने पर गोरखपुर से दूसरे दिन ही आ जाता है। जबकि उसे हिस्सा बंटवारा के समय कई बार बुलाने पर भी नहीं आता है और आकर वह अपने छोटे भाई रमेश से झगड़ा करता है, और माँ को भी भला बुरा कहता है। उस समय उनका मझला भाई अशोक भी वापस आता है और वह सुशील का ही साथ देता था।

अब कुछ दिन बाद ही हमारा धार्मिक पर्व छठ होने वाला था। उनकी माँ प्रति वर्ष यह पूजा बड़े धूम-धाम से करती थी। इस वर्ष भी सभी लोग पूजा में आए हुए थे। छठ पूजा के प्रातः पूजन के समप्ल होने के बाद सभी घर गंगाघाट से वापस आते हैं। रमेश सभी संबंधियों के प्रसाद वितरण के संबंध में माँ से बात-चीत कर रहा था ठीक उसी समय उनके बड़े भाईयों के मन कुछ और बात चल रही थी। और उसी वक्त सुशील पांडे और उनके मझले भाई अशोक पांडे ने कुल्हाड़ी से रमेश पर हमला कर दिया रमेश ने प्रहार को अपने हाथों से रोक लिया। वह दोनो घर को छोड़ कर दूसरे पड़ोसी के घर जाकर बैठ गए। इस बात को लेकर रमेश ने बैठक की कि आखिर क्यों वह ऐसा कर रहे हैं। बैठक हुई उसमें बहुत सारी बातें हुई साथ साथ इसे मौके का फायदा उठकर सुशील एवं अशोक ने अपना हिस्सा मांग लिया जबकि दोनों अभी बाहर ही रहते थे उन्हें कोई आवश्यकता न थी। इस बात को लेकर एक बैठक और बुलाने की तारीख रखी गयी। इस बीच रमेश की माँ की तबीयत खराब हो जाती है और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया जाता है। पर ऐसी परिस्थिति में भी बदलते रिश्तों की आहट ने माँ का प्यार को भी भूला दिया और देखने तक नहीं गया। रमेश के पास पैसे न थे उसने उधार लेकर माँ का इलाज कराया। इन सबमें सबसे दुःखद बात यह रही की सुशील ने माँ जिस दिन अस्पताल से वापस आती है उसी फिर से बैठक करने की जिद्द करता है। वृहस्पतिवार का दिन था उनकी माँ अपना काम कर रही थी तब बैठक होने का निर्णय लिया जाता है। उस दिन रमेश अपने काम पर गया रहता है उनकी माँ बोली ठीक है रमेश को आ जाने दो फिर हम बैठक कर लेंगे। पर वह नहीं मानते तब उसे कॉल किया गया वह घर आता है बैठक प्रारंभ होती है। बैठक मुख्य मुद्दा रहता है जमीन का बंटवारा जो अभी तक नहीं किया गया था। बंटवारा प्रारंभ होता है दोनो भाई सुशील और अशोक को उनका हिस्सा दिया जाता है। रमेश और उनका एक और भाई अखिल एक साथ रहने का फैसला करते हैं। उसी बैठक के सदस्यगणों में से किसी एक ने उनकी माँ के जीवन-यापन के लिए सभी भाईयों को एक मासिक राशि देने को कहा जिस पर दो भाई (रमेश, अखिल) राजी हो गए चूँकि वह पहले से ही माँ का देख-भाल कर रहे थे। पर और दोनों भाई (अशोक एवं सुशील) तैयार नहीं होते हैं, पर थोड़ा समाज का दबाव बनने पर वे मासिक 300 देने पर राजी होते हैं। कुछ ही महीने देने के बाद वह देना बंद कर देते हैं। फिर रमेश भी माँ से कहता है माँ आप मत मांगना जितना हो पाएगा मैं करूँगा इस बात पर माँ के आँखों में आसू आ जाते हैं, और सोचती है कि रमेश के पिता ने सबके लिए जितना खर्च किया उसका आधा भी रमेश के ऊपर न कर पाए। आज उनके न रहते

हुए भी हर समय मेरी हर इच्छा पूरी करता है पर जिस बेटे के लिए अर्थात् सुशील के बारे में कहती है कि उसके पिताजी ने हर सुखो का त्याग कर उसमें ही अपना और अपने परिवार का जीवन देखा। इन्ही बातों को सोच रही थी। तभी बड़ा बेटा सुशील आता है और साथ में अशोक को भी ले आता है। वह अपने हिस्से की जमीन जिसमें अभी तक कोई भी दीवार चारों भाईयों के बीच नहीं पड़ी थी। सुशील अब अपनी हिस्से की जमीन को वह माँ के लाख कहने के बावजूद भी घेर देता है और साथ में अशोक की जमीन को भी। अब माँ का रहने वाला घर जो सुशील के हिस्से में थी अब वह उनके हिस्से से अलग हो गया। अब माँ को बड़ा आघात लगता है और सोचने लगती है कि जिसे अपने गोद से अलग करने से भी डर लगता था आज वह मुझे बेघर कर गया। यह घटना उनके दिल-दिमाग पर इतना असर करता है की वह उनकी सोचने की क्षमता और याद रखने की क्षमता कमजोर पड़ने लगी। अब माँ को सबसे छोटे रमेश और अखिल की शादी की चिंता सता रही थी। रमेश ने अपने बड़े प्रयासों के बाद अपने बड़े भाई का शादी स्वयं की जिम्मेवारी पर लेते हुए अपनी जो थोड़ी बहुत कमाई करता था उससे करता है। माँ ने अशोक और सुशील से मदद मांगती है और विवाह में सम्मिलित होने को कहती है। शादी में दोनों भाई आते हैं लेकिन एक अंजाने मेहमान की तरह उनका व्यवहार रहता है, उसे देखकर माँ को बड़ा दुःख होता है। वह अपने बड़े बेटे से कहती है अब घर का बड़ा तू ही तो है तू ऐसे मेहमानों की तरह रहेगा तो फिर समाज के लोग हमें क्या कहेंगे। जैसे तैसे करके उसकी शादी हो जाती है। जैसे ही बारात की विदाई होकर वापस आती है। फिर सुशील यह कहकर लड़ाई करने लगता है कि मुझे शादी में कोई महत्व नहीं दिया गया उनकी माँ उन्हें मनाती है। दो दिन बाद ही उसकी रिशेप्सन पार्टी रखी जाती है सारी तैयारियां हो चुकी थी। तभी सुशील आकर माँ और छोटे भाई के साथ हंगामा करता है। इसे देख कई मेहमान भी बीच में आ जाते हैं और बड़ी मुश्किल से मामला ठीक होता है। इस बार सुशील ने सबसे बड़ा अपराध करता है कि वह अपना घर पड़ोस के दोस्त को रहने के लिए दे देता है, पर माँ को नहीं देता है। माँ की मनोदशा इन सब दृश्यों को देखकर और भी खराब हो जाती है और अचानक एक दिन वह माँ की ऐसी हालात हो जाती है कि वह किसी को पहचानने में असमर्थ हो जाती है। आज तक वह अंतिम आठ वर्षों से नर्क की जिदंगी जी रही है। पर इस बात से ज्यादा इस बात का दुःख है कि तब भी सुशील ने कभी भी अपने माँ के लिए कुछ प्रयास तक न किया। जहाँ तक हो सके रमेश और सुशील करते हैं। पर आज रिश्ते केवल स्वार्थों पर आधारित हैं पर यह भी पूर्ण सत्य नहीं है क्योंकि रमेश आज भी अपनी माँ की सेवा करता है। पर आज रिश्ते बदल चुके हैं यह भी कहना जायज लगता है।

शून्य का रहस्य



श्री यशवंत कुमार वर्मा

वरिष्ठ अनुवादक

शून्य के आविष्कार से न केवल शैक्षणिक स्तर पर इनका व्यापक उपयोग हुआ है बल्कि तकनीकी में भी यह एक वरदान बनकर उभरी है। शून्य का प्रभाव मानव जगत के साथ-साथ वस्तुओं पर भी देखा जा सकता है। उदाहरण के रूप में आदमी कई दिनों के मेहनत के बाद कुछ समय विराम लेता है, विराम करने के बाद वह पुनः सक्रिय होकर उसी वेग से काम में लग जाता है। कई लोग उत्तम स्वास्थ्य के लिए व्रत को हितकारी मानते हैं क्योंकि व्रत रखने से एक दिन के लिए पाचन तंत्र शून्य की स्थिति में चला जाता है। यह भी देखा जाता है कि खेत-खलिहान को यदि कुछ समय के लिए खाली (शून्य की अवस्था) छोड़ दिया जाए तो अगले पैदावर में गुणात्मक वृद्धि होती है। इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि शून्य की स्थिति में जीव-निर्जीव के आंतरिक गुणों में स्वभाविक परिवर्तन होता है।

आध्यात्म में शून्यता अर्थात् तूरा अवस्था को ब्रम्हावस्था माना गया गया जब हम इस अवस्था पर पहुंच जाते हैं तो हम ब्रह्मांड की शक्ति के साथ जुड़ जाते हैं। ब्रह्मांड जो असिमित उर्जा, संपन्नता और स्थिरता का स्रोत है, शून्य की अवस्था प्राप्त करने पर शरीर में संचारित होने लगती है।

इस तथ्य के समर्थन में एक कथा प्रस्तुत है। एक गर्भवती हिरण अपना बच्चा जनने के लिए जंगल में उधर-उधर दौड़ लगा रही थी लेकिन उनको सुरक्षित स्थान मिल नहीं पा रहा था, क्योंकि जंगल में चारों ओर आग फैली हुई थी। किसी तरह एक पहाड़ के टीले पर पहुंची वहां भी एक शेर घात लगाए बैठा हुआ था और सामने से एक शिकारी तीर के नोक में निशाना साधे टीले की छोर पर खड़ा था। इस विपरीत अवस्था में हिरण को कुछ सुझा नहीं वे वहीं बैठ कर मन पर हावी विकट परिस्थितियों की चिंता को त्याग कर शून्य की अवस्था में चली गयी और बच्चा जननी लगी। अचानक कुछ समय बाद बादल घिर आए और जैसे ही बिजली चमकी शिकारी का पैर फिसला और वो खाई में जा गिरा, उनके कमान से निकला तीर शेर को जा लगा। वर्षा के कारण जंगल की आग भी बुझ गयी और इधर मादा हिरण एक स्वस्थ बच्चा जनने में भी सफल रही।

यह दृष्टांत यही इंगित करता है कि जब भी विपरीत परिस्थिति मन को विचलीत करने लगे अथवा फैसला लेने में दुविधा हो तो कुछ समय के लिए तन-मन से अपने आप को पृथक कर लें, स्वमेव ब्रम्हांड की

उर्जा जरूर सहायक होगी। किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति के प्रति अपेक्षा ही हमारे मन को अक्रांत करता है। व्यक्ति विपरीत परिस्थिति से नहीं बल्कि अनुकूल परिस्थिति की अपेक्षा से दुखी होता है। संसाधनों का उपभोग उसमें लिप्त होकर नहीं अपितु विरक्त होकर करने में लाभकर है और जब यह सत्य समझ में आ जाएगा उस दिन से हमारा हर कर्म एवं विचार हमारे अनुकूल हो जाएगा।

तीन शातीर चोर थे, उसे कहीं से पता चला कि एक सिद्ध योगी के पास अनमोल धन है। वे उस योगी के पास पहुंच कर उस धन की मांग करने लगे। योगी ने कहा कि मैंने यह धन कई वर्षों तक एकाग्रचित होकर एक ही जगह बैठकर अर्जित की है यदि तुम मे से कोई एक घंटा तक बिना कुछ किए एक जगह पर बैठा रहा तो धन उनको सौंप दूंगा। चोर ने समझा कि हमने इतने बड़े-बड़े कारनामे किए हैं उसके तुलना में तो ये हाथी और चीटी की बात हुई। वे इस शर्त से राजी हो गए और एक जगह बैठ गए। पांच मिनट में एक चोर हाथ पैर में अकड़न की वजह से उठ खड़ा हुआ। दुसरा, पन्द्रह-बीस मिनट में अस्थिर विचारों से हार मान गया। तीसरा चोर सब भुलकर बैठे रहा, घंटा बीत गया, दिन गुजर गए, धीरे-धीरे वे विचार और शरीर से मुक्त होकर शून्यता में स्थित होने लगे। दो दिन बाद तीसरा चोर उठा और चल पड़ा, दोनो चोर ने पूछा - धन नहीं लोगे?

तीसरा चोर विनम्रता से मुस्कुराते हुए जवाब दिया- मुझे जो चाहिए था वो मिल गया।

यूं तो शून्य अस्तित्वहीन है पर समझा जाए तो इसमें पूरा विश्व समाहित है।

सुक्तियाँ

अभिलाषा की पिपासा कभी नहीं बुझती, न वह पूरी तौर पर संतुष्ट ही होती है।

सिसरो

सुख-भोग की लालसा, आत्म-सम्मान का सर्वनाश कर देती है।

प्रेमचंद

जो आदमी दूसरों के भावों का आदर करना नहीं जानता, उसे दूसरे से भी सद्भावना की

आशा नहीं करनी चाहिए।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

आदर्श-विहिन मनुष्य मल्लाहरहित नौका जैसा है।

महात्मा गांधी

आलस्य दरिद्रता का मूल है।

यजुर्वेद

प्रगति का सूत्र



श्री पुरुषोत्तम नंद
सहायक लेखा अधिकारी

प्राणी मात्र में सुख, शांति और आनंद उपलब्ध करने की चाह स्वाभाविक है। मनुष्य में वह कुछ अधिक विकसित इसलिए होती है क्योंकि वह सुख और आनंद के नए-नए मार्गों की खोज कर सकता है।

“जिन खोजा तिन पाइया” यानि की जो खोज करेगा, वह पाएगा। यह एक निर्विवाद सिद्धांत है। पर खोज तो उसी को करनी होगी जिसे कुछ पाना है। भौतिक जगत में इससे विपरीत भी घटित हो सकता है। खोजे कोई और उसका भोग कोई दूसरा करे। पर आत्म जगत में ऐसा कुछ नहीं होता। वहां शांति और सुख पाने का रास्ता किसी दूसरे के हाथ में नहीं है। अपने द्वारा अपना कल्याण, अपने द्वारा अपनी उपलब्धि – यही तो है शास्वत सुख की दिशा का मार्ग। इस मार्ग को खोज ने और उस पर अविश्रान्त भाव से चलने की तैयारी हो ठीक, अन्यथा उठो यहां से।

यहां तो वे ही व्यक्ति आ सकते हैं जो प्रयोक्ता हैं और जीवन में निरंतर प्रयोग करते रहते हैं। निरंतर प्रयोगकरने का उत्साह प्रगति के लिए पहला सूत्र है। ऐसा उत्साह जो कभी बंद न हो। उत्साह का दीप निरंतर जलकर ही निराशा के सघन तिमिर हो हटा सकता है। अभव्य मोक्ष क्यों नहीं होता, इसलिए क्योंकि उसमें कभी मुक्त होने की इच्छा ही प्रकट नहीं होती। यदि एक क्षणके लिए मुमुक्षा जागृत हो जाए, मुक्ति के लिए उत्साह का दीप जल जाए तो वह व्यक्ति कभी अभव्य रह नहीं सकता।

मन में किंचित भी उत्साह न हो और साधना के लिए कोई इच्छा व्यक्त करे तो वह मात्र धोखा है, प्रवंचना है। कितना मूल्यवान है प्रगति का यह सूत्र। इसमें न तपस्या की जरूरत, न कष्ट सहने की जरूरत और न इच्छाओं को दमित करने की जरूरत है। बस देखना है पूरी प्रमाणिकता के साथ। जो व्यक्ति स्वयं को देखता रहता है, उसके जीवन में अवांछनीय तत्वों का प्रवेश नहीं हो सकता। जीवन को सरस और सुन्दर बनाने के लिए सर्वदा वर्तमान में ही रहें।

साथी



श्री रबीन्द्र नाथ चाँद
हिन्दी अधिकारी

साथी इसी तरह आगे भी हम दोनों साथ देते रहेंगे
बूढ़ापे की हर जरूरत में हाथ बढ़ाते रहेंगे
अगर कभी कभार दवा लेना भूल जाएंगे
एक दूजे को याद दिलाएंगे या हाथों से पिला देंगे

अगर चश्मा पहन कर भूल से कभी यूँ सो जाएंगे
धीरे से आकर चश्मा जरूर उतार देंगे
अगर घुटने में दर्द के कारण चल नहीं पाएंगे
लाठी बन कर एक दूजे को सहारा हम देंगे।

ढलती उम्र की पीड़ा पर थोड़ा अफसोस जताएंगे
फिर आपस में जवानी की मीठी याद दिलाएंगे
यौवन की थोड़ी खट्टी-मीठी नोक झोक याद करेंगे
किसने हारी किसने जीती इस पर बहस करेंगे

हार जीत का फैसला हम आपस में कर लेंगे
हर हाल में उम्र के हर पड़ाव में साथ-साथ चलेंगे
दुनिया दारी क्या कहें ये भूल जाएंगे
आखरी तक जीवन साथी का धर्म हम निभाते रहेंगे।

पता नहीं चलता



श्री सीमाचल साहु
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

हाथ आई चीज
कब फिसल जाती है
पता नहीं चलता
जिंदगी कब गुजर जाती है
पता नहीं चलता।

कोई खुशियां मनाए
कोई करे मातम
पता नहीं चलता
जीवन में मूल्यबोध
कब गिर जाते हैं
पता नहीं चलता।

क्या कहना चाहते हैं
और क्या कह जाते हैं
पता नहीं चलता
जबान कैसे फिसल जाती है
पता नहीं चलता।

आप ही आप
सब चलता है
पता नहीं चलता
पर गरीबों की
कब होगी सुनवाई
पता नहीं चलता।

हानिकारक सोशल मीडिया



श्री विशाल कुमार
डीईओ

एफ बी, व्हाट्सएप पर एक ही चलन है,
जिसे देखो इन पर ही मगन है।
न घरवालों की जिम्मेदारी,
न पढ़ाई में ध्यान है,
अब तो बस सबको सोशल मीडिया से प्यार है।
सुनो ध्यान से सोशल मीडिया वालों
सोशल मिडीया ने अपनों को पराया बनाया है।
कुछ लोगों ने तो दोस्तों तक को गंवाया है।
ये तो सोचो सोशल मीडिया ने हमें
या हमने सोशल मिडीया को बनाया है।
इस ऑनलाईन रहने के चक्कर ने

बहुत लोगों का भट्ठा बिठया है।
साथ बैठे लोगों से भी बातें करने का
ये दौर आया है, इस नए ट्रेंड ने तो ठीक से
बोल सकने वालों को भी गूंगा बनाया है।
लाईक और कमेंट के चक्कर में,
कुछ लोगों को तनाव आया है।
डॉक्टर भी जाते ही समझ जाते हैं
कि ये सोशल मिडीया नामक वायरस आया है।
सुनो ध्यान से अब भी संभल जाओ
वक्त ने बहुत कुछ समझाया है,
तभी तो यह तुम्हें बतलाया है।



श्री मनोरंजन पाणिग्राही
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

मेरे दिल की मधुमक्खी
फूलों से फूलों तक उड़ती है छुपकर
उसे मत पूछो
अब वो बैठी है किस फूल पर।
मेरे धड़कन की पक्षी
शरद से हेमंत, हेमंत से बसंत की
डाली से डाली पर उड़ती फिरती है,
हर ऋतु के लिए बसेरा उसका खुला है,
उसे मत पूछो
अब वह किस ऋतु की डाली पर बैठी है।
तिल चिन्ह बनकर जल रही है
दोनों वक्ष की चोंटी पर,
उसे मत पूछो
इस मधुमास में वो रोज रास रचाती है,
जल-जल कर ठीक किसके वक्ष युगल पर ?

जिंदगी का विष छान-छान कर अमृत लाई है।
उस अमृत को
किसके होंठ पर उड़ेल कर,
खुद विषपान किया है।
उस विष को पान कर
मोहिनी को मोहित कर रहा है,
उसे मत पूछो,
सच में किसके लिए वो
हंस-हंस कर विष पान किया।
अदृश्य राजहंस
मौत के नीले झील से झील में तैर चुकी है,
उसे मत पूछो
अब वह किस मूर्त के
संगम स्थल पर मौत तैर रही है।

ओस



श्री प्रदीप कुमार
डी.ई.ओ

कितनी प्यारी –प्यारी ओस
चलकर आई कितनी कोसा।
मोती जैसी चमक रही है,
हीरे जैसी दमक रही है।
अगर छू लिया, होगी पानी,
करना मत ऐसी नादानी।

किरण-सहेली आएगी,
हाथ पकड़ ले जाएगी।
खेलेंगी ये हाथा-ताली,
ओस कहीं छिप जाएगी।
किरणें पकड़ न पाएँगी,
बस इतना ही अफसोस।

हिंदी से क्यों शर्माते हैं ।

अंग्रेजी में नंबर थोड़े कम आते है,
अंग्रेजी बोलने में भी लटपटाते है,
पर अंग्रेजी के लिए पूरी जान लगाते है,
क्योंकि हिंदी बोलने से हम शर्माते है।
एक वक्त था जब हमारे देश में हिंदी का बोलबाल था
माँ की आवाज में भी सुबह का उजाला था,
उस माँ को अब हम माँम बुलाते है,
क्योंकि हिंदी बोलने से हम शर्माते हैं।

देश आगे बढ़ गया पर हिंदी पीछे रह गई,
इस भाषा से अब हम नजर चुराते है,
क्योंकि हिंदी बोलने से हम शर्माते है।
माना अंग्रेजी पूरी दुनिया को चलाती है,
पर हिंदी भी तो हमारी पहचान दुनिया में कराती है,
क्यों ना अपनी मातृभाषा को फिर से सराखो पर
बिठाएं
आओं हम सब मिलकर हिंदी दिवस मनाएं।



जिंदगी तेरा शुक्रिया

श्री संजीव दुबे
डीईओ

मुझे मैं और हम में फर्क बताने के लिए शुक्रिया,
ये बेवफा, एक दिन अचानक छोड़ जाने के लिए शुक्रिया।
धूप में परछाई बनकर संग चला करती थी वो,
ये बादल, उस सूरज को ढकने के लिए तेरा शुक्रिया।

दिन भर काटना मुश्किल सा हो गया था, जाने के बाद उसके,
ये खुदा, हीरे जैसे कुछ दोस्त देने के लिए तेरा शुक्रिया।
घर पर उदास बैठ जाता था, नौकरी ना मिलने पर,
ये माँ मेरी, बिन कहे सब समझ जाने के लिए तेरा शुक्रिया।

मेरे जज्बातों का मजाक उड़ा, अपनी मजबूरी गिनायी तूने,
जाते-जाते मेरी औकात याद दिलाने के लिए तेरा शुक्रिया।
बताया बीमार हूँ, और मिलने चली गई बाजार किसी और से उस दिन,
ये दोस्त, इतने सही वक्त पर मुझे बाजार बुलाने के लिए तेरा शुक्रिया।

रातों में सोने से पहले याद बहुत सताती थी उसकी,
ये नौकरी, यूँ थकाकर पल में मुझे सुलाने के लिए तेरा शुक्रिया।
हाथों में शराब की बोतल भी हो सकती थी उसे भुलाने के लिए,
ये कलम, मुझे मेरा वजूद दिलाने के लिए तेरा शुक्रिया।

राजभाषा गतिविधियाँ

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय में दिनांक 06 सितंबर से 20 सितंबर, 2019 तक मनाए गए हिंदी पखवाड़ा समारोह की एक संक्षिप्त रिपोर्ट :-

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2019 :- दिनांक 06 सितंबर से 20 सितंबर, 2019 तक प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखा परीक्षा) ओड़िशा कार्यालयों तथा उपनिदेशक (केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा) कार्यालय द्वारा सम्मिलित रूप में हिन्दी पखवाड़ा समारोह बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया।

उद्घाटन समारोह :- दिनांक 06 सितंबर, 2019 को प्रधान महालेखाकार सुश्री यशोधरा राय चौधरी की अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया, इस अवसर पर महालेखाकार श्री बिभुदत्त बसंतिया महोदय भी मंच पर उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में मंचासीन गणमान्य व्यक्तियों ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। तत्पश्चात कार्यालय की स्टॉफ सदस्य सुश्री बबिता मणि, सुश्री मोनिका चौहान, सुश्री श्वेता सागरिका, सुश्री सुजाता मल्लिक एवं सुश्री प्रतिभा ने सरस्वती वन्दना प्रस्तुत किया। उपमहालेखाकार श्री राहुल प. ने स्वागत भाषण दिया। इसके बाद हिंदी अधिकारी श्री आर. एन. चाँद ने पूरे पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार एवं महालेखाकार ने सभागार में उपस्थित अधिकारी/कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़ा समारोह पर अभिनंदन करते हुए अपने संबोधन में पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बहुसंख्या में शामिल होकर सफल बनाने का आग्रह किया तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार को अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया। उद्घाटन समारोह को अधिक मनोरंजक बनाने के लिए हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें नगर के जाने माने हास्य कवि श्रीमती पुष्पा सिंघी, श्री किशन खंडेलवाल, श्रीमती रेहाना खानम, श्री निशिथ बोस एवं श्री आर. एन. चाँद ने कविता, चुटकुले, व्यंग्य सुनाकर ऑडिटोरियम हॉल में खसाखस भरे दर्शकों को हंसा-हंसाकर लोटपोट कर दिए। कवि सम्मेलन का संचालन श्री आर. एन. चाँद ने किया। अंत में, उपमहालेखाकार श्री नंद दुलाल दास धन्यवाद ज्ञापन दिए और सभा संपन्न हुई।

संयुक्त प्रतियोगिताएँ :- चारों कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए 16 एवं 17 सितंबर 2019 को कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में हिंदी वाद-विवाद, हिंदी प्रश्न मंच तथा हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में काफी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विजेता प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा प्रश्नमंच के लिए दर्शक पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

पखवाड़ा समारोह के दौरान दिनांक 15 सितंबर, 2019 को स्टॉफ सदस्यों के बच्चों के लिए दो वर्गों में हिंदी निबंध लेखन एवं हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिताएं रखी गई थी। जिसमें काफी संख्या में बच्चों ने

भाग लिया तथा प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा शेष प्रतिभागी बच्चों को सात्वना पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

समापन समारोह :- दिनांक 20 सितंबर, 2019 को प्रधान महालेखाकार श्रीमती मधुमिता बसु की अध्यक्षता में समापन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रधान महालेखाकार श्रीमती मधुमिता बसु, प्रधान महालेखाकार श्रीमती यशोधरा राय चौधरी एवं महालेखाकार श्री बिभुदत्त बसंतिया द्वारा दीप जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात स्टॉफ सदस्यों द्वारा समूह गान प्रस्तुत किया गया। इसके बाद वरिष्ठ उपमहालेखाकार श्री आर.के. सोलंकी द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। उपमहालेखाकार श्री दिनमणि मल्लिक द्वारा माननीय गृहमंत्री का हिंदी दिवस के अवसर पर देशवासियों को दिए गए संदेश का पठन किया गया एवं हिंदी अधिकारी श्री रवीन्द्र नाथ चाँद ने पखवाड़ा रिपोर्ट प्रस्तुत किया। इस अवसर पर चारों कार्यालयों के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित थे।

समारोह में प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.), प्रधान महालेखाकार (आ. व रा.क्षे.लेप.) एवं महालेखाकार द्वारा लेखा एवं हकदारी कार्यालय की अर्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका वातायन एवं लेखापरीक्षा कार्यालय की अर्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका सुरभि का विमोचन किया गया। अपने अभिभाषण में प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) महोदया ने उपस्थित सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दी सरल एवं सहज भाषा है एवं हिन्दी के सहारे देश के कोन-कोने में फैले गांव से लेकर शहरों में बसे करोड़ों लोगों के दिलों तक अपने विचार व वार्ता को पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कार्यालय में स्टाफ सदस्यों को हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएँ एवं कार्यक्रमों में भारी संख्या में भाग लेने हेतु बधाई दी और भविष्य में भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यालयीन स्तर पर दैनिक कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने की बात कही।

विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम :- पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में श्री महेन्द्र शतपथी के निर्देशन में कार्यालय के स्टॉफ सदस्यों द्वारा हिन्दी नाटक “अब तो अपना लो” का मंचन किया गया, जिसका दर्शकों ने मंत्रमुग्ध होकर आनंद उठाया। पखवाड़ा की गतिविधियों का संयोजन उपमहालेखाकार श्री दिनमणि मल्लिक ने किया। हिन्दी अधिकारी श्री आर. एन. चान्द ने शैरो शायरी के माध्यम से दर्शकों का मनोरंजन करते हुए कार्यक्रम का संचालन किया एवं अंत में उपमहालेखाकार श्री के.सुर्जित के धन्यवाद ज्ञापन के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।



हिंदी पखवाड़ा समारोह – 2019 में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम

क्र	नाम एवं पदनाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	प्रतियोगिता	स्थान
1	रोहित कुमार, डीइओ	टिप्पणी मसौदा	I
		निबंध लेखन	II
2	अनुभव कुमार सिंह, डीइओ	टिप्पणी मसौदा	II
		निबंध लेखन	III
		वाद विवाद	II
3	तिलक कुमार, डीइओ	टिप्पणी मसौदा	III
4	प्रभा कांगारी, व.ले.	निबंध लेखन	I
		वाद विवाद	III
5	रवि कुमार, लेखाकार	वाद विवाद	I
6	बबिता राणि सेठी, व.ले.	टिप्पणी मसौदा	I
		श्रुत लेखन	III
7	शांतिलता सेठी, व.ले.	टिप्पणी मसौदा	II
		कविता पाठ	I
8	चन्द्रमा प्रधान, व.ले.	टिप्पणी मसौदा	III
9	पिंकी गुर्लिआ, लिपिक	श्रुत लेखन	I
		कविता पाठ	II
10	हेलेना मिंज, व.ले.	श्रुत लेखन	II
11	विष्णु प्रसन्न दास, लेखाकार	कविता पाठ	III
12	विश्वास कुमार सिन्हा, स.ले.अ.	टिप्पणी मसौदा	I
		शुद्ध शब्द चयन	I
		कविता पाठ	II
13	मनोरंजन पाणिग्राही, ले.अ.	टिप्पणी मसौदा	II
		शुद्ध शब्द चयन	II
		कविता पाठ	III
14	चार ओराम, ले.अ.	टिप्पणी मसौदा	III
15	पुरुषोत्तम नन्द, स.ले.अ.	शुद्ध शब्द चयन	II
16	अभिषेक कुमार, स.ले.अ.	शुद्धशब्द चयन	III
		कविता पाठ	I
17	सुदाम सेठी, स.ले.अ.	फाइलों पर टिप्पणी	I
18	रबिन्द्र कुमार दास, स.ले.अ.	फाइलों पर टिप्पणी	II

संयुक्त प्रतियोगिता का परिणाम

क्र. सं.	नाम एवं पदनाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	प्रतियोगिता	स्थान
1	अभिषेक कुमार, स.ले.अ.	वाद विवाद	I
2	गौरव प्रकाश, डीईओ		II
3	रवि कुमार, लेखाकार		III
4	रोहित कुमार, डीईओ		I
5	विकास कुमार		
6	आँखी सरकार		
7	रोहित राज	प्रश्नमंच	II
8	गौरव प्रकाश, डीईओ		
9	लोकेश कुमार		
10	प्रभाकर तिवारी		III
11	भूदेव प्रकाश		
12	एन.पी.रायगुरु, व.ले.		
13	प्रशांत भदौरिया		I
14	राजेश कुमार झा		
15	नवीन चन्द्र चौधरी		
16	प्रतिमा मणि देई		II
17	आँखी सरकार		
18	अमलेन्दु कुमार हलधर		
19	सुप्रिया पण्डित		III
20	बबिता राणि सेठी, व.ले.		
21	अमीय रंजन		
22	रोहित कावा	अंताक्षरी	II
23	तनुजा बिश्वाल		
24	बिजय कुमार साहू		
25	निखिल कुमार		III
26	शांतनु गोस्वामी		
27	चयन मुखर्जी		

बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं

अ. हिंदी निबंध लेखन

1.	तितली पंडा	प्रथम
2.	स्नेहा सतपथी	द्वितीय
3.	आश्रिता बेहेरा	द्वितीय
4.	काजल साहु	तृतीय

सांत्वना पुरस्कार

1.	राकेश रंजन गौड़
2.	अंकिता खान
3.	प्रज्ञा निवेदिता साहू
4.	स्मृति निवेदिता साहू
5.	मनोज कुमार राऊल

ब. हिंदी कविता पाठ

1.	प्राची पटनायक	प्रथम
2.	शिवम कुमार	द्वितीय
3.	शीतल महांति	द्वितीय

सांत्वना पुरस्कार

1.	प्रमिता मिश्र
2.	शक्ति प्रसाद महापात्र
3.	रतिकांत गौड़
4.	रूद्रनारायण गौड़
5.	सुमित कुमार साहु
6.	अनुभव महांति
7.	प्रीतम साहु

**विविधा
कार्यालय समाचार**
(अवधि सितंबर, 2019 से फरवरी, 2020)
पदोन्नतियाँ
लेखा अधिकारी पद पर पदोन्नति

1	श्री चार ओराम	02.09.2019
2	श्री के. नागेश्वर राव	01.10.2019
3	श्री देवानंद दास	01.10.2019

सहायक लेखा अधिकारी पद पर पदोन्नति

1	श्री सौम्य रंजन महाराणा	04.09.2019
2	श्री गढ़ी प्रसांत	04.09.2019
3	श्री प्रवीण कुमार	04.09.2019
4	श्री दीपक यादव	04.09.2019
5	श्री रवि कुमार	04.09.2019

पर्यवेक्षक पद पर पदोन्नति

1	श्री दीपक सिंहा	02.12.2019
2	मांगी सुधाकर	03.02.2020

लेखाकार पद पर पदोन्नति

1	प्रकाश बारा	28.10.2019
2	सुब्रत कुमार सिंह	28.10.2019
3	नीलांचल बारिक	28.10.2019
4	सनातन मिश्रा	28.10.2019
5	चिन्मयी साहू	28.10.2019
6	सस्मिता सोरेन	28.10.2019
7	बिश्वराज गरूण	03.02.2020

डीईओ ग्रुप-बी पद पर पदोन्नति

1	परमजीत	03.02.2020
2	नितेश शर्मा	03.02.2020

लिपिक पद पर पदोन्नति

1	सुकांत कुमार साहू	18.11.2019
2	श्याम प्रसाद नायक	18.11.2019
3	सुशीला हनहंगा	18.11.2019
4	सुशांत साहू	01.01.2020

समस्त पदोन्नत अधिकारियों/कर्मचारियों को वातायन परिवार की ओर से हार्दिक अभिनंदन एवं ढेरों बधाइयाँ।

सेवानिवृत्ति/स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

1	श्री कीर्ति प्रकाश सेन, लेखा अधिकारी	
2	श्री बिद्याधर मल्लिक, लेखा अधिकारी	
3	श्री परमानंद सामल, लेखा अधिकारी	30.09.2019
4	श्री जगबंधु बेहेरा, वरिष्ठ लेखाकार	
5	श्री देब प्रसाद दास, वरिष्ठ लेखाकार	
6	श्री बिद्याधर सेठी, पर्यवेक्षक	31.10.2019
7	श्री एन. सेशाद्री, लेखा अधिकारी	
8	श्री नकुल नायक, कैटीन	
9	श्री मनोहर हश, वरिष्ठ लेखाकार	30.11.2019
10	श्री प्रफुल्ल चंद्र जेना, वरिष्ठ लेखाकार	
11	श्री जगदीश चंद्र महांति, लेखाकार	
12	श्री मानस रजन सिंह, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	
13	श्री कार्तिक चंद्र सेठी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	
14	श्री बिजय कुमार महाराणा, सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2019
15	श्री बेणूधर बारिक, वरिष्ठ लेखाकार	
16	श्री देबराज साहू, वरिष्ठ लेखाकार	
17	सुश्री जयश्री दास, आशुलिपिक-1	
18	सुश्री सर्मिष्ठा एस. त्रिपाठी, वरिष्ठ लेखाकार	
19	श्री सुधी रंजन चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखाकार	
20	श्री प्रदीप कुमार लाक्रा, वरिष्ठ लेखाकार	29.02.2020
21	श्री जसपति नायक, वरिष्ठ लेखाकार	
22	श्री मायाधर जेना, एमटीएस	

इस कार्यालय में सत्य, निष्ठा और ईमानदारी के साथ लंबे सेवाकाल के बाद सेवानिवृत्त हुए सभी अधिकारी और साथी कर्मचारियों के प्रति वातायन परिवार का श्रद्धापूर्वक नमन। सेवोपरांत आगे की दीर्घायु की कामना करते हुए ईश्वर से सबके लिए कुशल स्वास्थ्य तथा मंगलमय जीवन की कामना करता है।

साथी जो बिछड़ गए

1	श्री प्रदीप कुमार चक्रवर्ती, एमटीएस	27.01.2020
---	-------------------------------------	------------

बिछड़े हुए साथियों के लिए ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को परम सद्गति प्राप्त हो एवं उनके परिवारजनों को इस दुखद परिस्थिति से उबरने की शक्ति दें।

हिंदी गतिविधियों की कुछ झलकियाँ



हिंदी गतिविधियों की कुछ झलकियाँ



हिंदी गतिविधियों की कुछ झलकियाँ

